Vol. No. 02, Sl. No. 02

ब्रह्मावर्त

निर्झरिणी

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका

Articles & Creative Writings Published in both Hindi & English

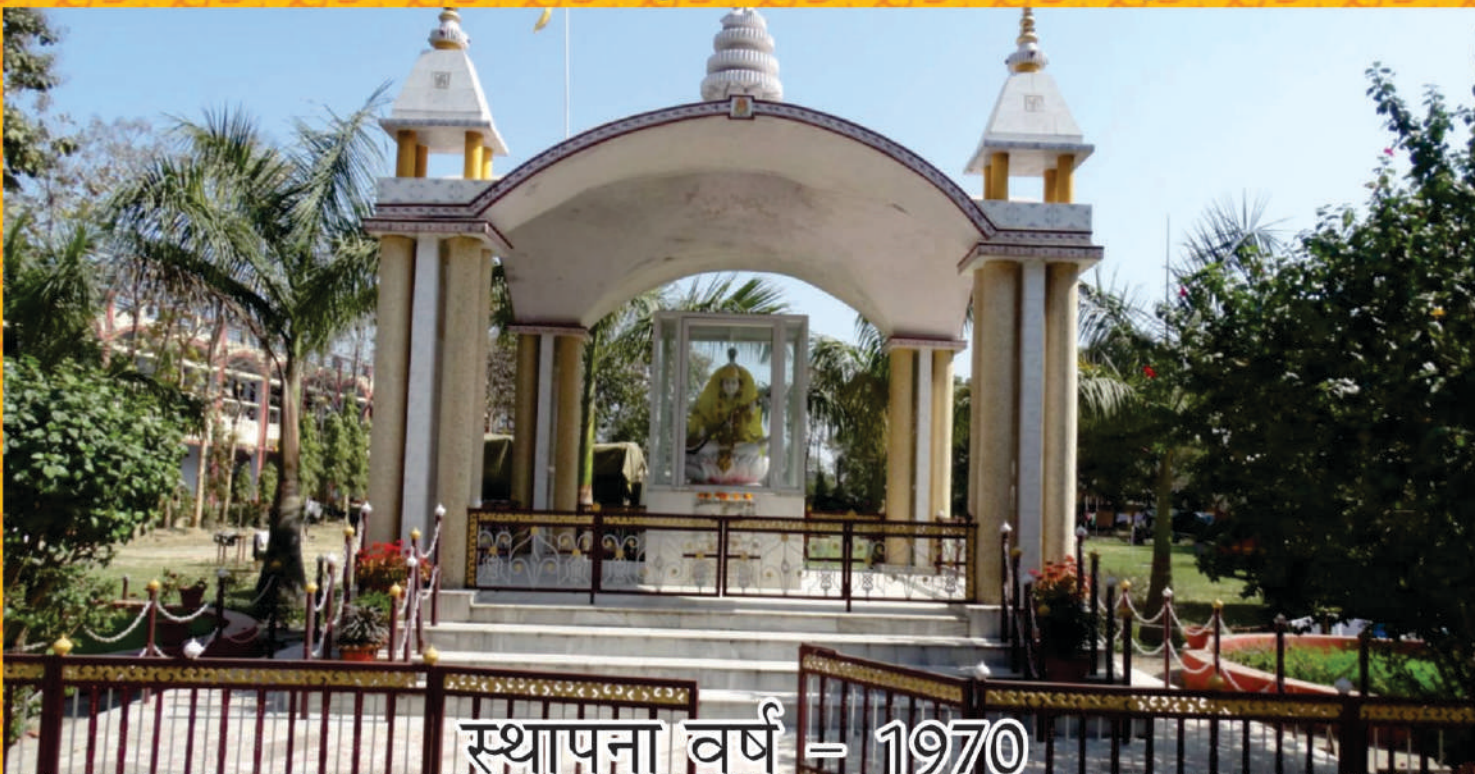

2023

ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज

मन्धना, कानपुर – 209 217

Ownership : The Principal, Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Brahmavart PG College, Bithoor Road, Mandhana, Kanpur
Published by Divyansh Kumar for Genic Books Publishers Pvt. Ltd., Agra-282001
Laser Type Setting & Printed by Satguru Graphics & Printers, Kidwai Nagar, Kanpur

प्रार्थना

वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमिय मन्त्र नव, भारत में भर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
काट अन्ध उर के बन्धन स्तर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर।
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
नव-गति, नव-लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ, नव जलद मन्द रव।
नव-नभ के विहग वृन्द को, नव-पर नव स्वर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।

ब्रह्मावर्त महाविद्यालय कुलगीत

ज्ञान मन्दिर है ये, ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
उच्च शैक्षिक केन्द्र की संकल्पना से,
नाम ब्रह्मावर्त हो इस धारणा से।
नींव है उन्नीस सौ सत्तर में स्थापित,
उत्तरी गंगा के तट पर है विराजित।
श्रेष्ठता का आओ उद्बोधन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
सृष्टि की उद्गम धरा पर हम खड़े हैं,
वीणापाणि माँ की ममता में बढ़े हैं ।
ब्रह्मा का आवर्त ब्रह्मावर्त है ये,
भाल का टीका, हमारा गर्व है ये ।
भाव की रोली से अभिनन्दन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
शास्त्र संस्कृति और कला की वीथिका है,
षष्ठ रागों से सुसज्जित गीतिका है ।
आधुनिक तकनीक का संकाय है ये,
ज्ञान और विज्ञान का पर्याय है ये ।
बोध की गंगा में अवगाहन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
जानकी माँ से मिली संवेदनाएँ,
लक्ष्मीबाई सी प्रखर हैं बालिकाएँ ।
बालको में तेज है लवकुश सरीखा,
राष्ट्रभक्ति शील और अनुराग सीखा ।
सत्य का सम्पूर्ण अनुशीलन करें हम,
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
त्याग, तप, बलिदान की पावन धरा है।
प्रेम और सौहार्द से परिसर भरा है ।
नित नए आयाम गढ़ते जा रहे हैं,
छात्र-शिक्षक यश-ध्वजा फहरा रहे हैं ।
दक्ष निर्देशन में ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
साथ मिलकर दृढ़ प्रतिज्ञा यह करें हम,
उत्तरोत्तर उन्नयन पथ पर बढ़ें हम ।
राह की कठिनाइयों का भान होगा,
जीत होगी लक्ष्य का संधान होगा ।
जय विजय उद्घोष और गर्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

02 मई, 2023

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज, मन्धना, कानपुर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त–निर्झरिणी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षण संस्थानों पर अपने विद्यार्थियों का गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने और शिक्षा को नवोन्मुखी बनाए रखने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। मुझे आशा है कि पत्रिका में ऐसे मूल्यपरक लेखों का प्रकाशन किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर - 208024
(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur - 208024
(Formelrly Kanpur University Kanpur)

प्रो० विनय कुमार पाठक
कुलपति
Prof. Vinay Kumar Pathak
Vice Chancellor

01 मई, 2023

शुभ सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, कानपुर** अपनी वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त–निर्झरिणी'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

विगत कई वर्षों से ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, कानपुर जनपद के विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के प्रति सजगता एवं सहजता से उत्प्रेरित करते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने व उन्हें स्वावलम्बी बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएँ शिक्षकों तथा छात्राओं के शैक्षणिक व अकादमिक उन्नयन का प्रतिबिम्ब प्राप्त होती हैं, जो उनकी लेखनी को उच्चीकृत करने में अहम भूमिका निभाती है। आशा है कि प्रकाशित होने वाली वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** सारगर्भित, ज्ञानवर्धक एवं रोजगारपरक पाठ्य सामग्री से परिपूर्ण होगी, जो छात्र एवं छात्राओं के साथ आम जनमानस के बहुआयामी विकास में सहायक सिद्ध होगी।

इन्हीं कामनाओं के साथ महाविद्यालय के उत्तरोत्तर उन्नयन एवं प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु **बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ**।

प्रो0(विनय कुमार पाठक)

प्रो0(डॉ0) वी0 के0 कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कॉलेज
कानपुर।

कार्यालय/Office : +91-512-2581280
फैक्स/Fax : +91-512-2581280
ईमेल/E-mail : vcocsjmu@gmail.com
वेबसाइट/Website : www.csjmu.ac.in

डॉ० रिपुदमन सिंह

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय परिसर
कानपुर मण्डल कानपुर
मो0नं0– 9412183382

दिनांक 01 मई, 2023

सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर अपनी वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त–निर्झरिणी' का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित सेमिनार पत्रिका में छात्र / छात्राओं / शिक्षकों / कर्मचारियों / बुद्धिजीवी जन के विचारों की अभिव्यक्ति होती है तथा लेखन / अपने विचारों को व्यक्त करने के प्रति उनकी रुचि जाग्रत होती है, साथ ही साथ उनकी शैक्षिक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित लेख व रचनायें एक स्वस्थ परम्परा का बीजारोपण करेंगे तथा समय–समय पर छात्रों/व्यक्तियों का मार्गदर्शन करेंगे।

वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के पठन से छात्र–छात्राओं में सामाजिकता, राष्ट्रीयता, मानवीयता व दायित्वबोध जैसे नागरिकता गुणों का विकास होगा, वहीं उनमें सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति, सहभागिता, कल्पना आदि भावों को बल मिलेगा।

वार्षिक पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

प्रोफे0 (डॉ0) रिपुदमन सिंह

सेवा में,
प्रोफे0 (डॉ0) वी0 के0 कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कॉलेज, मन्धना
कानपुर नगर।

वीरेन्द्र कुमार 'शुक्ल'
एडवोकेट
मन्त्री/प्रबन्धक, प्रबन्ध समिति
ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज
मन्धना, कानपुर - 209217

स्थापना वर्ष : 1970
104/432, पी रोड
कानपुर नगर
मो० : 9839217675
ई-मेल : bvpg.mandhana@yahoo.in
वेबसाइट : www.bvpgc.co.in

(छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से स्थायी सम्बद्धता प्राप्त)
(यू०जी०सी० अधिनियम 1956 की धारा 2(f) और 12(B) के तहत अनुमोदित संस्थान)

पत्रांक :

दिनांक :

सन्देश

मैं यह जानकर अत्यधिक प्रसन्न हूँ कि हमारा महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों, सहकर्मी शिक्षकों एवं जनसामान्य में लेखन के प्रति रुचि पैदा करने तथा महाविद्यालयीय गतिविधियों को जनसामान्य तक पहुँचाने के उद्देश्य से अपनी ई–पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** के दूसरे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि अपनी ई–पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** में महाविद्यालय के समस्त कार्यक्रमों की जानकारी सहित अनेक शैक्षिक नवाचार प्रकाशित किए जायेंगे तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले प्रतिभागियों के लिए कैरियर कॉउन्सिलिंग सहित अध्ययन सामग्री भी उपलब्ध करायी जायेगी।

मैं ई–पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** के सफल प्रकाशन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार को अनेकशः बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज समिति
मन्धना कानपुर नगर

प्राचार्य की कलम से............

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि **ब्रह्मावर्त महाविद्यालय** अपनी वार्षिक पत्रिका **ब्रह्मावर्त निर्झरिणी** के द्वितीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय में इससे पूर्व वार्षिक पत्रिका प्रकाशन की परम्परा नहीं थी। वर्ष 2021 में मेरे द्वारा प्राचार्य के पदभार ग्रहण करने के उपरान्त महाविद्यालय के छात्रों के सर्वांगीण विकास करने हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना, रोवर्स-रेंजर्स, वार्षिक खेलकूद, वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं वर्ष भर चलने वाले व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए। उसी कड़ी में महाविद्यालय पत्रिका का भी विशेष स्थान है, जिसमें छात्र-छात्राएं, शिक्षक, कर्मचारी अपने विचारों को शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं और अपनी लेखन क्षमता को प्रदर्शित कर सकते हैं।

महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के प्रयास से **ब्रह्मावर्त निर्झरिणी** का द्वितीय योग प्रस्तुत करते समय अत्यन्त हर्ष हो रहा है और आशा है कि माँ सरस्वती की कृपा से यह अनन्त काल तक प्रकाशित होती रहेगी। पत्रिका का प्रकाशन श्रमसाध्य कार्य है, लेकिन पत्रिका के सम्पादक मण्डल ने जिस लगन से कार्य किया है, उससे पत्रिका बहुत बेहतर हो गई है। यह सत्य है कि अभी पत्रिका के स्तर में सुधार की आवश्यकता है लेकिन वह क्रमबद्ध ढंग से ही पूरा किया जा सकता है। एक और महत्त्वपूर्ण बात जो आप सबके साथ मैं पत्रिका के माध्यम से साझा करना चाहता हूँ, वह यह है कि जहाँ हमारे महाविद्यालय परिवार के सदस्य प्रो० एस०एन० मिश्र जी सेवानिवृत्त हुए तो वहीं अर्थशास्त्र विभाग में श्री दिनेश कुमार गौतम जी तथा स्ववित्तपोषित योजनान्तर्गत दो नए शिक्षकों ने कार्यभार ग्रहण किया और इसी वर्ष महाविद्यालय का कुलगीत तैयार हुआ, जो डॉ० संजू शब्दिता द्वारा रचित तथा डॉ० उदय सरकार जी द्वारा संगीतबद्ध किया गया है और यह महाविद्यालय के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम में संगीतकार डॉ० उदय सरकार के निर्देशन में छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। मैं छात्र-छात्राओं को भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और उनसे आशा करता हूँ कि भविष्य में वह **ब्रह्मावर्त निर्झरिणी** के आगामी अंकों के लिए अपना मूल लेखन उपलब्ध कराते रहेंगे।

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

प्रधान सम्पादक की कलम से............

उच्च शिक्षा संस्थानों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा शिक्षा को नवोन्मुखी बनाए रखने की अहम जिम्मेदारी होती है। महाविद्यालय वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए विद्यार्थियों को समग्रता प्रदान करता है। ब्रह्मावर्त निर्झरिणी का प्रकाशन महाविद्यालय का समग्र सामाजिक प्रक्षेपण है, जिसके माध्यम से महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ गैर शैक्षणिक गतिविधियों यथा राष्ट्रीय सेवा योजना-NSS, रोवर-रेंजर एवं एन.सी.सी. आदि का प्रसार करना उनके लिए प्रेरणास्रोत बनेगा, जो अभी तक इन गतिविधियों से अपने को दूर रखा हुआ है।

सृष्टि के भव्य एवं विस्मयकारी कार्य किसी अव्यक्त चेतनशक्ति विद्यार्थियों की ओर संकेत करते हैं। भारत की बहुमुखी साधना और सभ्यता ऋषि चेतना लब्ध तत्त्वानुभूति पर प्रतिष्ठित है। आचार्य दण्डी ने स्वीकार किया है कि यदि शब्द नामक ज्योति (ज्ञान) संसार में प्रदीप्त न होती तो यह सारा संसार घोर अज्ञानान्धकार से आच्छादित रहता-

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दावयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

वेदों में '**श्रूयतेऽनयेति**' के रूप में '**ओ३म्**' शब्द के श्रवण की बात कही गई है। वैयाकरण भर्तृहरि के अनुसार शब्द ही एकमात्र सत्यभूत पदार्थ है, '**स्फुटत्यर्थोऽस्मिन्निति स्फोटः**', अर्थात् जिसमें या जिससे अर्थ प्रस्फुटित हो, वही स्फोट या वास्तविक शब्द है। शब्द वाणी के रूप में परा, पश्यन्ती, मध्यमा और बैखरी चार रूपों वाला है।

ऋषियों, योगियों और वैयाकरणों ने शब्द तथा नाद की चर्चा की है। आधुनिक वैज्ञानिक बिग बैंग (Big Bang) अर्थात् '**महा-विस्फोट**' के सिद्धान्त को मानते हैं। राधा-स्वामी मत में तीन बिग बैंग्स तथा शब्द चेतना का कथन है। आत्म चेतना एवं आत्म विकास ज्ञान द्वारा ही सम्भव है। परम चेतना का भण्डार एक ही है। संसार में ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर, साधु, संत और महात्मा; मनुष के आत्मोत्थान हेतु पथ-प्रदर्शन करते रहे हैं; इनके गुप्त होते ही अनुयायियों ने उनके मौलिक सिद्धान्तों को भुलाकर समाज में परस्पर विद्वेष और भेदभाव का वातावरण बना दिया।

पारस्परिक भेदभाव, टकराव और अलगाव को रोकने के लिए सभी धर्मों के सार शब्द या नाद चेतना के यथार्थ से अवगत होने, उसकी साधना एवं उसमें लय होने की आवश्यकता है, जिसमें पथ-प्रदर्शक सच्चे जीवित (व्यक्त) सन्त सद्गुरु का होना आवश्यक है। सर्वात्मभाव के दर्शन से ही आपसी घृणा व वैमनस्य को समाप्त किया जा सकता है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥

(ईशावास्योपनिषद्-६)

'**ब्रह्मावर्त निर्झरिणी**' पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय रूपी ज्ञान के मन्दिर में प्रदान की जा रही ज्ञान की धारा को सुदूर क्षेत्र तक समाज के मध्य प्रवाहित करना इसका उद्देश्य है। निश्चित ही इस प्रकाशन से समाज को चिन्तन का एक अभिनव दृष्टिकोण प्राप्त होगा और सहृदय-सामाजिक लाभान्वित होंगे। चूँकि महाविद्यालय का ध्येय वाक्य भी है, जो लक्ष्य को आलोकित करता है- **आत्मनं विद्धि**।

डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री
प्रधान सम्पादक

सम्पादक की लेखनी.........

मैं समझता हूँ, किसी पत्रिका का प्रकाशन केवल पत्रिका का प्रकाशन नहीं अपितु हजारों-हजार ज्ञान की मशालें प्रज्ज्वलित करने के समान है। यह पंक्तिबद्ध मशालें न सिर्फ हमारी बौद्धिक चेतना को जागृत करने में सहायक हैं बल्कि हमारे अंत:करण के परिमार्जन में भी इनकी महती भूमिका हो सकती है। ब्रह्मावर्त निर्झरिणी इन्हीं हजारों-हजार मशालों की ओर एक नन्हा कदम है। मैं यकीन से कह सकता हूँ कि यह पत्रिका प्रतिभाओं की ऐसी पौधशाला है, जिसके पौधे आगे चलकर हमारे देश के उद्यान को महकायेंगे, महकाते रहेंगे।

निर्झरिणी की यह यात्रा अभी आरम्भ ही हुई समझिए। यह अंक इसका दूसरा कदम है। हमें इन्हीं नन्हें-नन्हें कदमों से मीलों दूरी तय करनी है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हम आप सभी के स्नेह एवं सहयोग से वह दिन भी जरूर देखेंगे।

महाविद्यालय के गत सत्र को एक तरह से हम स्वर्णिम सत्र भी कह सकते हैं, एक नहीं दो नहीं कई ऐसी नवीन उपलब्धियाँ रहीं, जो हमारे महाविद्यालय के लिए ऐतिहासिक हैं।

चाहे वह निर्झरिणी के प्रकाशन का प्रारम्भ हो, वार्षिक खेल आयोजन 'उल्लास' हो या फिर रंगारंग सांस्कृतिक साहित्यिक कार्यक्रम 'अभिव्यक्ति' हो इन सभी कार्यक्रमों ने महाविद्यालय परिसर में नवीन चेतना, ऊर्जा का संचार किया है एवं हर्षोल्लास प्रदान किया है। और हाँ, अब हमारे पास महाविद्यालय का अपना कुलगीत भी है, जिसे हम विविध आयोजनों में सामूहिक रूप से गा सकते हैं, गौरवान्वित हो सकते हैं। इसी क्रम में हमारे बीच के वरिष्ठ साथी प्रोफेसर एस.एन. मिश्र जी सेवानिवृत्त भी इसी वर्ष हुए। वह क्षण हमारे महाविद्यालय परिवार के लिए भावुक रहा। जैसा कि विदित है समयानुसार परिवर्तन अवश्यम्भावी है। सो हम उनके आगामी जीवन के लिए शुभमानायें प्रेषित करते हैं।

हमारे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी छात्र-छात्राओं ने अत्यधिक ललक और उत्साह के साथ अपनी सृजनशीलता के माध्यम से पत्रिका में सहभागिता की, साथ ही शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक स्टाफ ने भी पत्रिका में गहरी रुचि लेते हुए अपनी मनोहारी और ज्ञानवर्द्धक रचनाएं भेजीं। पत्रिका में सम्मिलित आप सभी के रचनात्मक सहयोग के 'निर्झरिणी' सम्पादक मण्डल आपका आभारी है। साथ ही यदि आप पत्रिका को और अधिक रचनात्मक एवं ज्ञानवर्द्धक बनाने के लिए अपना कोई सुझाव देना चाहें तो उसका स्वागत है।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी सम्पादक मण्डल के परिश्रम का परिणाम है के पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष है। आप सभी के अमूल्य सहयोग के बिना यह किंचित सम्भव न हो पाता। हमें प्रसन्नता है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमने साहित्य तथा लेखन के संस्कार को अर्जित किया है। यह हम सबके लिए गर्व का विषय है कि पत्रिका के माध्यम से रचनात्मक अभिव्यक्ति वाले लोग हमारे सामने आ पा रहे हैं। हमने निर्झरिणी में सत्र की सभ्ज्ञी गतिविधियों को समेटने का प्रयास किया है, फिर भी कहीं कुछ रह गया हो तो त्रुटि समझ कर क्षमा करेंगे, ऐसी मुझे आशा है।

डॉ० अमित कुमार दुबे
सम्पादक

सम्पादक मण्डल

संरक्षक
प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार

प्रधान सम्पादक
डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री

सम्पादक
डॉ० अमित कुमार दुबे

सह-सम्पादक
डॉ० बप्पा अधिकारी

सह-सम्पादक
डॉ० दिनेश कुमार गौतम

सदस्य
डॉ० दिव्या भदौरिया

सदस्य
डॉ० आरती दीक्षित

सदस्य
डॉ० अर्चना सक्सेना

सदस्य
डॉ० अलका कनौजिया

सदस्य
श्री अजय कुमार मिश्र

सदस्य
श्री अंकुर मिश्र

सेवानिवृत्त शिक्षक

प्रो० एस०एन० मिश्र

शारीरिक शिक्षा विभाग

नवागन्तुक शिक्षक

डॉ० दिनेश कुमार गौतम

अर्थशास्त्र विभाग

एम०ए० (अर्थशास्त्र), इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, यू०जी०सी० नेट

पूर्व में - प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फतेहपुर

महाविद्यालय परिवार सेवानिवृत्त शिक्षक प्रो० एस०एन० मिश्र को भावी जीवन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता है तथा नवागन्तुक शिक्षक श्री दिनेश कुमार गौतम का महाविद्यालय परिवार में हार्दिक स्वागत करता है।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी
Brahmavart Nirjharni

Patron
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar

Editorial Board
Dr. C.K. Shastri
Dr. Amit Kumar Dubey
Dr. Bappa Adhikari
Shri Dinesh Kumar Gautam

Magazine Name : ब्रह्मावर्त निर्झरिणी / Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Artricles & Creative Writings published in both Hindi & English Language

Owner & Patron : Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Principal, Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Contact :

E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in

Website : https://bvpgcollege.in/

Published By : Divyansh Kumar for Genic Books Publishers Pvt. Ltd. , Agra - 282001

Contact :

E-mail : genicpublication@gmail.com

Website : https://genicpublication.com/

Aim & Scope : The **"Brahmavart Nirjharani"**, as a creative as well as academic initiative taken by Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur, is a multidisciplinary, annual journal for research articles and creative writings in both Hindi and Eglish language. Currently, the journal invites articles in the domain of multidisciplinary research areas and creative writingsin both Hindi and English. Apart from these, research works in literature, culture, religion, translation, ethnicity and nationalism, sign language, science, technology and software development related are also encouraged in the above-mentioned languages. It intends to inspire writers, poets and artists to create new works that contribute to the cultural heritage of the region. It aims to encourage critical thinking and intellectual discussions on various topics related to Indian culture and history. The authors strictly adhere to the conditions to provide necessary details like title, author name, affiliation, abstract, and references.

About Us : "Brahmavart Nirjharani" is a magazine dedicated to create intellectual temperament and cultivate the creative faculty of the young minds. Our mission is to promoting cultural heritage, fostering intellectual discourse, and providing informative content. We strive to provide high-quality content, encourage critical thinking, or inspire positive change. Our team of experienced editors is committed to delivering insightful analysis and engaging creativity.

जीतते वही हैं, जो हारते नहीं हैं

सौम्या
बी०ए० उत्तीर्ण 2021

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

यह भगवद्गीता का प्रसिद्ध श्लोक है। इसमें बताया गया है कि ''तुम्हें निश्चित कर्मों का पालन करने का अधिकार है, लेकिन तुम फल प्राप्त करने के अधिकारी नहीं हो, तुम स्वयं को अपने कर्मों के फलों का कारण मत मानो और न ही अकर्मा रहने में आसक्ति रखो।''

यह श्लोक हमें कार्य को निष्काम भाव से करने की अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

कर्म करो, फल की चिन्ता न करो –

हमें अपना कर्म करने का अधिकार है लेकिन इसका फल हमारे अपने कर्म प्रयासों पर निर्भर नहीं है। परिणाम के निर्धारण में हमारे प्रयत्न, अन्य लोगों के प्रयास, संबद्ध मनुष्यों के समेकित कर्म, स्थान और परिस्थितियाँ आदि अनेक तत्वों की भूमिका होती है। फिर भी यदि हम परिणाम के लिए चिन्तित रहते हैं और जब हमें ये हमारी इच्छा अनुरूप नहीं मिलते हैं, तब हम हार मान लेते हैं। जीवन में सभी असफलताओं का मूल मन स्थिरता के अभाव में निहित है।

स्वामी विवेकानन्द –

''मन की दुर्बलता से अधिक भयंकर और कोई पाप नहीं।''

जो सामान्यत: भविष्य में संभाव्य हानि के भय की कल्पना का परिणाम होता है, हममे से अधिकांश लोग असफलता के भय से महान कार्य को अपने हाथों में लेना ही स्वीकार नहीं करते और जो कोई थोड़े लोग ऐसा साहस करते भी हैं तो अल्पकाल के बाद निरुत्साहित होकर उस कार्य को अपूर्ण छोड़ देते हैं।

''इसका एक ही उपाय है कि किसी श्रेष्ठ आदर्श के प्रति कर्मों का समर्पण।''

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–

एक विचार लें, उस विचार को अपनी जिन्दगी बना लें, उसके बारे में सोचिए, उसके सपने देखिए, उस विचार को जिएं, आपका मन, आपकी माँसपेशियाँ, आपके शरीर का हर एक अंग, सभी उस विचार से भरपूर हो, और दूसरे सभी विचारों को छोड़ दें, यही सफलता का तरीका है।

जिन्दगी में हार–जीत चलती रहती है लेकिन वह व्यक्ति जो हारने से पहले मन में हार जाता है, वह जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता है। मन की शक्ति से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

''जिन्दगी में हार न मानना ही जीत की पहली निशानी है।''

किसी भी क्षेत्र में जीत हासिल करने के लिए हमें कुशल ज्ञान के साथ-साथ खुद पर आत्मविश्वास का होना जरूरी है। मेहनत के साथ धैर्य व उत्साह का होना आवश्यक है, जो लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है।

बेंजामिन डीजैली-

''धैर्य के माध्यम से कई लोग उन परिस्थितियों में सफल हो जाते हैं, जो कि एक निश्चित असफलता जान पड़ती है।''

मनुष्य धैर्य के कारण विजय प्राप्त कर सकता है, जिसके अनेक उदाहरण उपस्थित हैं।

- गाँधी जी ने अपने धैर्य के कारण ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया।
- महाभारत में पाण्डवों की जीत का कारण दृढ़ संकल्प ही था।

जीवन में संघर्ष -

सभी मनुष्य के जीवन में संघर्ष है मगर जिन्होंने संकल्प के साथ काम किया तथा स्वयं की योग्यता का सौ प्रतिशत योगदान इन विकट परिस्थिति में विश्वास के साथ दिया तो वह निश्चय ही संघर्ष को पार कर एक नये साहस, व अपनी क्षमताओं में पहले से अधिक विश्वास के साथ आगे बढ़ सकेगा।

''जीवन कहता है कि धैर्य करना सीखो, धैर्य करना सीख लिया तो हर चीज आपको समयानुसार मिल जायेगी।''

मन के हारे हार है मन के जीते जीत -

यदि हम जीवन से घबराकर हार मान लेते हैं तो ऐसे में सारा उत्साह खत्म हो जाता है, हम असफलता से घबरा जाते हैं। ऐसे अवसरों पर हमें साहस के काम करना चाहिए तथा अपना मन छोटा करने के बजाए बजाय मजबूत इरादों के साथ कार्यों को क्रियान्वित करना है।

स्वामी विवेकानन्द -

''यह कभी मत कहो कि मैं नहीं कर सकता, क्योंकि आप अनन्त हैं, आप कुछ भी कर सकते हैं।''

जीवन में किसी बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने में होने वाली आलोचनाओं से घबराकर अपने मार्ग और उद्देश्य से भटकना नहीं चाहिए क्योंकि यही आलोचनाएं ही आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

Bruce Lee -

"No one is ever defeated until defeat has been accepted as a reality."

व्यक्ति को दृढ़संकल्प, लगन व कर्तव्यनिष्ठा के साथ लक्ष्य प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए। क्योंकि 'कोई भी तुम्हें उस वक्त तक नहीं हरा सकता, जब तक तुम खुद से न हार जाओ।

यही जज्बा रहा तो मुश्किलों का हल भी निकलेगा, जमीं बंजर हुई तो क्या, वहीं से जल भी निकलेगा।

न हो मायूस, न घबरा अंधेरों से, इन्हीं रास्तों के दामन से सुनहरा कल भी निकलेगा॥

पिता और मैं

प्रखर शुक्ल
एम०ए० द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

नींद खुली भूत दिखा
मैं डर गया था पापा
तुमसे चिपट कर अपने मन को
मैंने समझाया था पापा
मेरी छोटी सी दुनिया के
हीरो से तुम पापा।

ऋतुएं बदली मैं बदला
तुम वैसे ही खड़े रहे पापा
नई इच्छाओं के मुझमें
फूल खिले थे पापा
मैं शहर आ गया
तुम पीछे रह गए पापा।

मेरी तुम्हारी सोच नहीं मिली
कही कमी रह गई तुममें पापा
मेरे तुम्हारे रास्ते अलग हो गए
जीवन को मनचाहा सजाया मैंने पापा
सोचा, जो मेरे तुम्हारे बीच हुआ
वैसा आगे नहीं होने दूँगा पापा।

अपने बच्चों को खूब लाड़–प्यार दिया
मैंने कोई कमी नहीं रखी पापा

बड़े हुए बच्चे और निकल गए
नई जमीन की तलाश में पापा
नई धरती में खूब फल–फूल रहे हैं
मुझसे नहीं रखते हैं कुछ भी वास्ता पापा।

मैं रह गया हूँ बिल्कुल अकेला
सब ऋतुएं गुजर गई हैं पापा
आँखों में स्मृतियों के छंद सजे रहते हैं
स्वप्न टूट चुके हैं , खुल गई है नींद पापा
मैं डर रहा हूँ
अब तुम याद आते हो पापा।

कविता

प्रखर शुक्ल
एम०ए० द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

संकल्प–विकल्प का बोध नहीं
लिए नयनों में प्यास घनी।
जा पहुँचा उत्तुंग शिखर पर
दृग जल में प्रतिबिम्बित प्रकृति रहस्य बनी।
क्षितिज फैला सुदूर तलक
मन में छूने की चाह घनी।
विस्फरित नेत्र निहारते अपलक
ज्यों प्रेयसी दूर खड़ी।

सब युक्ति विफल, हुआ व्यथित हृदय
हो निराश बैठ, वहीं तरु के पास।
मैं निहारता सौन्दर्य अपार
तभी दिखी ध्यानस्थ उमा प्रतिमा विशाल।
खड़ा हुआ मैं सायास
पलक–अपलक, कर स्तुतिबद्ध
बहा उठा दृग जल छल–छल।
फिर डूब गया मैं शून्य में अनायास
नहीं रहा जगत का कुछ भी आभास।

पाया मैंने क्षितिज मेरे पद–तल
बैठा हूँ मैं उमयांचल तल
मस्तक नत मातृ पद पर
गौरी हस्त निज मस्तक पर।

कविता

वर्तिका शुक्ला
एम०ए० पूर्वार्द्ध

सुनो लड़कियों
आज तुम्हें तुम्हारी ताकत दिखानी है
वीरता है तुम्हारी पहचान
यह बात तुम्हें याद दिलानी है।

कमजोर क्यों समझती हो
अपने आप को
झांक कर तो देखो
यह दुनिया तुम्हारी ही दीवानी है।

तुम्हारी ही जैसी थी वो,
जिसकी सुनी तुमने अमर कहानी है
बड़े गर्व से लेती होगी उनका नाम
कहती हो, वो हमारी झाँसी की रानी है।

अरे खुद को पहचानो तो,
बबीता फोगाट से कम दम नहीं हैं तूममे
जिनसे डरती हो ना, बोल दो उनसे
दिखाते नहीं हैं हम,
जो पावर छुपी है हममें।

कामयाबी का चाँद इतना तो दूर नहीं,
कि तुम पा न पाओ

हिम्मत तो जगाओ,
चलो एक बार फिर से सुनीता विलियम बन जाओ।

अरे बेटियों,
तुम भी अपना एक ऐसा वजूद दिखाओ
कि आपके माँ–बाप भी कह सकें
धन्य हैं हम, जो ऐसा परम धन पाओ।

लड़की हो,
इसका एक ऐसा अस्तित्व बता दो
हमारे घर में भी लड़की ही हो,
ऐसी ललक लोगों के दिल में जगा दो।

सिर्फ खुद को दृढ़ बनाने की जरूरत है
तुम में
मिट जायेंगी सारी बद्दुआएं
जिन्हें सहन करती हो तुम पल–पल में।

सिर्फ इश्क–मोहब्बत के लिए ही नहीं,
पहचानी जाती हो तुम
कोई तुम्हें बेवफा कह कर पुकारे
इतनी भी नहीं हारी तुम।

प्यार–व्यार के चक्कर को थोड़ा साइड में हटाओ
अब खुद को तलाशो और अपनी पहचान बनाओ।

बता दों सबको, निगाहें झुकाकर चलना

कमजोरी नहीं, सभ्यता है तुम्हारी
और पहनावा रखो ऐसा,
जिसमें झलके भारतीय संस्कृति की नारी।

खुद में एक ऐसी प्रतिष्ठा बनाओ,
कि तुम पर कमेण्ट करने वाले भी बोलें
बहन तो सिर्फ इसके जैसी ही पाओ।

गंगा के जैसी निर्मल और पवित्र हो तुम
लेकिन देखती हो ना,
गंगा का क्या हाल है
इसलिए तुम्हें खुद ही सम्भलना होगा,
क्योंकि तुमसे ही तुम्हारा पूरा परिवार है।

अरे लड़कियों, इतनी भी निर्बल नहीं हो तुम
कि अपना मान गिराओ
लोग तुम्हारे नाम से अभिमान जताएं
ऐसा परचम तुम लहराओ

अब जो आत्मबल तुम में देगा दिखलाई
वह यह बतलाएगा
बेटी हो तुम अपनी, न कि पराई।

अब इंतजार कर रहे हैं लोग
तुम्हीारे जीत की सुनने की शहनाई
वीरता बन गई है तुम्हारी पहचान
यह बात तुमने लोगों को याद दिलाई।

मृग और कस्तूरी

हर्ष यादव
बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष

जंगल-जंगल ढूंढ रहा है मृग अपनी कस्तूरी को
कितना मुश्किल है तय करना खुद से खुद की दूरी को
एहसास भी है पास उसका
चेहरा भी है याद उसका
धड़कन भी नाम लिए जा रही है
आँखों से पानी बरस रहा है
एक मृग अपनी चाहत को तरस रहा है
खोज रहा है
मिलने को कस्तूरी से!!
जंगल-जंगल ढूंढ रहा है मृग अपनी कस्तूरी को
कितना मुश्किल है तय करना खुद से खुद की दूरी को!!
है याद उसे अपनी कस्तूरी
करनी है उससे ढेर सारी बातें जो
रह गयी थी अधूरी
गुम हो गयी हैं न जाने कहाँ
बढ़ गयी है अब दोनों में दूरी
घूम रहा है फिर भी उसे मनाने को
ढूंढ रहा है उसे अपने पास बुलाने को
फिर से वही एहसास दिलाने को
जंगल-जंगल ढूंढ रहा है मृग अपनी कस्तूरी को
कितना मुश्किल है तय करना खुद से खुद की दूरी को!!
देखें है ख्वाब बहुत से, अपनी चाहत के
कैसे रह सकता है मृग, कस्तूरी से वो दूर

माँगा है आखिर उसे रब की इबादत से
उनकी मोहब्बत में तो बिछे हुए हैं फूल
दूर होकर भी दिल में धड़क रही है
वो साँसें मुझमें ही ले रही है
वो दूर होकर भी पास बहुत है
मृग की चाहत में इम्तहान बहुत है
जंगल-जंगल ढूंढ रहा है मृग अपनी कस्तूरी को
कितना मुश्किल है तय करना खुद से खुद की दूरी को!!

कविता

शिवांगी सिंह
एम०ए० द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

तुझसे दूर जाकर माँ
हर पल मैं पछताता हूँ
मैं ढूंढू तेरी गोद माँ
जहाँ मिलता
मुझको आराम है
तेरे ही चरणों में
मेरी है दुनिया
अब मैंने ये जाना है
हर पल तुझे
बस याद करूं माँ
अब आ भी जा
तू एक बार माँ
तुझसे मेरी जन्नत
तुझसे ही मेरी साँसें हैं माँ
एक बार तू बस
मुझे गले से लगा ले माँ
मेरी बस अब
यही ख्वाहिश है माँ
तुझसे दूर जाकर माँ
हर पल मैं पछताता हूँ

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा की उपयोगिता

भाविनी द्विवेदी
बी०ए० उत्तीर्ण 2021

संस्कृत शब्द की उत्पत्ति 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'क्त' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ है शुद्ध संस्कारयुक्त परिष्कृत भाषा। जैसा कि इसके अर्थ से ही स्पष्ट है, संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में सबसे मुख्य, मधुर और दिव्य है–

''भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीवार्णभारती।''

इसके अलावा संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में सबसे पुरानी और देवताओं की प्रिय भाषा है, इसलिए महर्षि इसे 'देववाणी' भी कहते हैं। आचार्य दण्डी की उक्ति है– ''**संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभि:।**'' संस्कृत भाषा विश्व में विद्यमान सभी भाषाओं की जननी है–

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

अर्थात् माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भीश्रेष्ठ है, इसलिए हमें उनका सम्मान और रक्षा करनी चाहिए।

भारतीय संस्कृति के सभी ग्रन्थ जैसे वेद, शास्त्र, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं, जो मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य (मोक्ष की प्राप्ति) के साधक हैं, अत: प्रत्येक भारतीय को भारतीय संस्कृति के मूलभूत वेदादि समस्त शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए अथवा संस्कृत भाषा का अध्ययन करना चाहिए। भारत का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद माना जाता है, जो संस्कृत भाषा में लिखा गया है और इसी भाषा के माध्यम से हम देवी–देवताओं की स्तुति करते हैं, संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यन्त सरल एवं सुस्पष्ट है और किसी भाषा का व्याकरण संस्कृत व्याकरण की तुलना नहीं कर सकता। संस्कृत व्याकरण का महत्व इस श्लोक से भलीभाँति स्पष्ट है–

यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्
स्वजनो श्वजन माऽभूत्सकलं शकलं सकृत्शकृत॥

अर्थात् पुत्र! यद्यपि तुम बहुतम विद्वान नहीं बन पाते हो तो भी व्याकरण का अध्ययन अवश्य करो ताकि 'स्वजन' (आत्मीय)'श्वजन' (कुत्ता) न बनें और 'सकल (सम्पूर्ण) 'शकल' (टूटा हुआ) न बने, 'सकृत' (किसी समय) 'शकृत' (गोबर का घूरा) न बने। अत: संस्कृत व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है, संस्कृत का व्याकरण अत्यन्त सरल है। संस्कृत वाक्य के शब्दों के क्रम में यदि हम परिवर्तन भी कर दें अर्थात् कर्ता, क्रिया, अव्यय, सर्वनाम आदि को किसी भी क्रम में लिखें, अर्थ परिवर्तित नहीं होता और इसके व्याकरण में कहीं कोई त्रुटि भी नहीं है तथा उच्चारण अत्यन्त शुद्ध और स्पष्ट है।

''संस्कृते सकल ज्ञानं संस्कृते किं न विद्यते॥।''

अर्थात् संस्कृत में सम्पूर्ण ज्ञान है। संस्कृत में क्या नहीं हैं?

वर्तमान युग जिसे हम कम्प्यूटर का युग कहते हैं क्योंकि वर्तमान में हम कम्प्यूटर का ही प्रयोग सबसे अधिक करते हैं, उस कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर में सर्वग्राह्य भाषा संस्कृत ही है तथा संस्कृत से ही गणित और विज्ञान की उत्पत्ति मानी जाती है। अतः वैज्ञानिकों ने भी विश्व स्तर पर संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ भाषा माना है।

संस्कृत भाषा में वैदिक मन्त्रों की इतनी महत्ता है कि कहा जाता है वैदिक मन्त्रों की ध्वनि से वातावरण स्वच्छ होता है और उच्चारण करने से मन निर्मल होता है। यह भाषा देश को 'विश्वगुरु' और भारत को 'सोने की चिड़िया' कहलाने के नाम से जानी जाती है।

अतः उपहास की बात है कि भारत की भूमि पर ऐसे लोग हैं, जिन्हें अमृतमयी वाणी संस्कृत में दोष और विदेशी भाषाओं में गुण नजर आते हैं। आज संस्कृत के अभाव में ही हमारा समाज अपनी आध्यात्मिक अवधारणा को धीरे-धीरे त्यागता जा रहा है और भौतिकवाद की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है।

भारत की दो ही प्रतिष्टा हैं- संस्कृत और संस्कृति।

''भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतसंस्कृतिस्तथा।''

डॉ० हरिनारायण दीक्षित ने अपनी कृति भारतमाता ब्रूते महाकाव्य में लिखा है कि-

रक्षितुं न च शक्यन्ते विना संस्कृतशिक्षणम्

सभ्यता संस्कृति लोके भारतस्य च शेविधः॥

अर्थात् संस्कृत की शिक्षा के बिना समाज में भारतीय सभ्यता, संस्कृति और विरासत की रक्षा नहीं की जा सकती।

विदेशी विद्वान सर विलियम जोन्स ने कलकत्ता के एक समारोह में कहा था- ''अब मेरे हाथ वह कुंजी आ गई है, जिसके सहारे विश्व की सब भाषाओं के रहस्य लोगों को बता सकूँ। वह कुंजी है- संस्कृत भाषा।'' सन् 2025 तक नासा ने संस्कृत में कार्य करने का लक्ष्य रखा है, अतः विदेशों में संस्कृत के अध्ययन को महत्व दिया जा रहा है। कहीं ऐसा न हो कि हम भारतीय संस्कृत को तुच्छ और मृत भाषा समझते रहें और हमारी ही संस्कृत और संस्कृति का पीछा करके अन्य देश हमसे आगे निकल जाएं।

अतः प्रत्येक भारतीय को अपनी संस्कृति और संस्कृत भाषा का अध्ययन अवश्य करना चाहिए और यत्न करना चाहिए कि निकट भविष्य में संस्कृत भाषा राष्ट्रभाषा बने, तभी हम भारत के भाषा सम्बन्धी प्रान्तीयता आदि के कलह को दूर कर सकते हैं और संसार में सच्ची विश्वशान्ति की स्थापना कर सकते हैं।

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी

सदने सदने जन जन वदने जयतु चिर कल्याणी॥

मैंने वर्ष 2021 में ब्रह्मावर्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय से स्नातक (बी०ए०) की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा इस महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करके अत्यन्त गर्व का अनुभव कर रही हूँ तथा मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि मुझे अपने महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'निर्झरणी' में लेख प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ।

Salute to the Indian Soldier

Prashant Singh
B.A. Ist Year

Salute to the Indian Soldier
Who can't break their order
For the country whole day and night
They never lose their sight

Salute to the Indian Soldier
Who can't break their order
For us they're on border
because they only follow order

Salute to the Indian Soldier
Who can't break their order
Why their favorite colour is blood?
Why there duties are gone to head?

Salute to the Indian Soldier
Who can't break their order
Because of them we're alive
As honey is safe behind the hike

Salute to the Indian Soldier
Who can't break their order
Wake up all and give respect
As we want as we expect

Salute to the Indian Soldier
Who can't break their order
I'll give salute again and again
Because, for Soldier I've no complaint.

धरती का भगवान्

प्रशान्त सिंह
बी०ए० प्रथम वर्ष

स्वर्ग में रहने वाले भगवान को तो बहुत कम लोगों ने है देखा
पर धरती पर रहने वाले भगवान से है सबका नाता।
क्योंकि वही होता है बच्चों का भाग्य विधाता।
कड़ी धूप में अपने खून–पसीने को जो जलाता।
तो जमा देने वाली सर्दी में भी काम से नहीं घबराता।
और मुश्किलों में अपनी आँखों को नहीं छलकाता।
अपने सपनों को भूल बच्चों के सुनहरे सपने सजाता।
जीवन के कठिन रास्तों पर चलना वह सिखाता।
वह कोई और नहीं पिता है कहलाता।
पिता से बड़ा अपना नाम करो।
कभी अपमान नहीं सदैव उन पर अभिमान करो।
सूरज की हर किरण रोशनी दे आपको।
हर खिलता फूल खुशबू दे आपको।
हम तो कुछ कहने के लायक नहीं।
भगवान हर खुशी दे आपको।
किसने देखा एक भगवान।
जो है मेरे पिता समान।

कविता

सौम्या दीक्षित
बी०ए० द्वितीय वर्ष

आओ एकजुट होकर सब
एक शिक्षित समाज बनाएं
संकुचित विचारों वाली मानसिकता को
सबके मन से मिटायें।

धर्म जाति का मेल मिटे सब
बस मानव धर्म हो सर्वोपरि
जिससे हो सके समाज में
एक नई चेतना और जागृति।

शिक्षित कर विचारों को सबके
मनुष्यता का पाठ पढ़ाकर
आओ सब मिलकर फिर से
अपना कर्तव्य निभाएं।

ऐसे करें जागरूक सबको
जिससे समाज में हो परिवर्तन
शुद्ध, सुदृढ़, मानसिकता के संग
एक नए विश्व का पदार्पण।

एक नए स्वप्न को पूरा करने
एक नया जागरण लाने को
आओ एक संकल्प उठाकर
आगे कदम बढ़ाएं।

कविता

सौम्या दीक्षित
बी०ए० द्वितीय वर्ष

बंदिशों को तोड़कर
दूर तलक जाती है।
इस दुनिया से परे।

बिना कहीं टकराये
स्वच्छंद बहती जाती है।
मेरी सोच के साथ।

बिना सवाल किए
बस चलती जाती है।
मेरी कलम के साथ।

मैं उतारना नहीं चाहता
बनावटी कल्पनाओं को
कागज पर।
और सच लिखा नहीं जाता।

अब बदलना चाहता हूँ।
मैं अपनी कल्पनाओं को
सच में।

नारी हिन्दुस्तान की

अक्षय कुमार
बी०ए० प्रथम वर्ष

सब दुनिया में वीर बहादुर नारी हिन्दुस्तान की
देश, धर्म पर मिटने वालीभूखी है बलिदान की।

सुनी नहीं क्या अमर कहानी
उस सीता महारानी की।
जिसका साहस-देख-देख
रावण को हुयी हैरानी थी।
सोने की लंका ठुकराने वाली, थी वह जानकी।
नारी हिन्दुस्तान की......

बच्चा-बच्चा नाम जानता
वीर पद्मिनी रानी का।
देश धर्म के मान की खातिर
जलना देश दिवानी का।
अमर कहानी छोड़ गयी वह देवी राजस्थान की।
नारी हिन्दुस्तान की......

पापी मुगलों को दुर्गा ने
रण में जा ललकारा था।
झाँसी की रानी ने
अंग्रेजों को खूब पछाड़ा था।
जिसे देख दीवार हिली सारे इंग्लिस्तान की।
नारी हिन्दुस्तान की......

शिवा, प्रताप, राम, कृष्ण
जैसों की महतारी थी।
जिसने शिक्षा दे पुत्रों को
बिगड़ी लाज सम्भाली थी।
आप मिट गई, लेकिन रखी लाज हमारे मान की।
नारी हिन्दुस्तान की......

कविता

आर्यन शर्मा
बी०ए० प्रथम वर्ष

मैं शंकर का वह क्रोधानल
कर सकता हूँ जगती क्षार–क्षार
डमरू की वह प्रलय ध्वनि हूँ
जिसमें नचता भीषण संहार
रणचण्डी की अतृप्त प्यास
मैं दुर्गा का उन्मत्त हास
मैं यम की प्रलयंकर पुकार
जलते मरघट का धुँआधार
फिर अन्तरतम की ज्वाला से
जगती में आग लगा दूँ मैं
यदि धधक उठे जल, थल, अम्बर
जड़, चेतन तो कैसा विस्मय ?
हिन्दू तन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय।

मैं अखिल विश्व का गुरु महान
देता विद्या का अमरदान
मैंने दिखलाया मुक्तिमार्ग
मैंने सिखलाया ब्रह्मज्ञान
मेरे वेदों का ज्ञान अमर
मेरे वेदों की ज्योति प्रखर
मानव के मन का अंधकार
क्या कभी सामने सका ठहर ?
मेरा स्वर नभ में घहर–घहर

सागर के जल में छहर–छहर
कर सकता जगती सौरभमय
हिन्दू मन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय।

मैंने छाती का लहू पिला, पाले विदेश के क्षुधित लाल
मुझ को मानव में भेद नहीं
मेरा अंत:स्थल वर विशाल
जग के ठुकराये लोगों को
लो मेरे घर का खुला द्वार
अपना सब कुछ लुटा चुका
फिर भी अक्षय है धनागार
मेरा हीरा पाकर ज्योतित
परकीयों का वह राजमुकुट
यदि इन चरणों पर झुक जाए
कल वह किरीट तो क्या विस्मय ?
हिन्दू मन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय।

मैं एक बिन्दु, परिपूर्ण सिन्धु है
यह मेरा हिन्दू समाज
मेरा इसका सम्बन्ध अमर
मैं व्यक्ति और यह है समाज
इससे मैंने पाया तन–मन
इससे मैंने पाया जीवन
मेरा तो बस कर्त्तव्य यही
कर दूं सब कुछ इसके अर्पण
मैं तो समाज की थाती हूँ
मैं तो समाज का हूँ सेवक

मैं तो समष्टि के लिए
व्यष्टि का कर सकता बलिदान अभय
हिन्दू मन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय।

रचयिता : मा० अटल बिहारी वाजपेयी जी

(भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री)

सच्ची मानवता

अर्चिता त्रिवेदी
बी०ए० उत्तीर्ण 2022

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

मानव जीवन एक अमूल्य निधि है। यूँ तो संसार में कटी पतंगों की भाँति अनेक मनुष्य नित्य जन्म लेते और मर जाते हैं लेकिन ऐसे महापुरुष कम होते हैं, जो अपने जीवन के उद्देश्य को समझते हैं, उनको पाने का प्रयास करते हैं और सफल भी होते हैं, ऐसे लोग अमर हो जाते हैं।

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य है मानव कल्याण। वही मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे। वास्तविकता यह है कि अपने संकुचित स्वार्थ से ऊपर उठकर मानव जाति का निःस्वार्थ उपकार सुरसरि के समान करना ही मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य और सबसे बड़ा धर्म है।

मनुष्य मूलतः एक सामाजिक प्राणी है। बिना समाज के मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। समाज की स्थिति परहित की भावना पर आधारित है। समाज में परस्पर सहयोग की भावना जितनी प्रबल होती है, वह समाज उतना ही सुखी होता है। जिस समाज के सदस्य स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं, वह समाज छिन्न-भिन्न हो जाता है। सभी धर्मों में परोपकार की भावना को महत्त्व दिया गया है। हिन्दू संस्कृति में तो परोपकार को सबसे बड़ा धर्म माना गया है-

परहित सरिस धर्म नहि भाई।

परपीड़ा सम नहि अधमाई॥

परोपकारी मानव सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार समझता है, इसीलिए कहा गया है-

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

परोपकार की भावना मनुष्य में ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों और जड़ पदार्थों में भी पाई जाती है। जो व्यक्ति सज्जन और विवेकशील होते हैं, वे सदा इस भावना का आदर करते हैं। वे स्वयं अनेक कष्ट सहकर भी दूसरों के खाने के लिए ही फल उत्पन्न करते हैं, नदी दूसरों के हित के लिए ही जल बहाती है। जब निर्जीव पदार्थों की यह दशा है, तो विवेकशील मानव क्यों न परोपकार के लिए सर्वस्व बलिदान कर दे। इसी भाव को कबीर ने निम्न दोहे के माध्यम से प्रकट किया है-

वृक्ष कबहुँ नहि फल भखै, नदी न संचै नीर।

परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर॥

महापुरुष अपना सर्वस्व देकर भी दूसरों का उपकार करते हैं। नि:स्वार्थ भाव से चिन्तन करने वाले गाँधी, मालवीय तथा तिलक जैसे महात्माओं द्वारा ही समाज का कल्याण होता है, यही वह धर्म है, जिसके द्वारा मानव जाति का उद्धार हो सकता है। जो समस्त मानव जाति का कल्याण सोचते हैं, जो दूसरों के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, उन्हीं का जीवन सफल होता है। मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है–

मरा नहीं वही कि जो जिया न अपने लिए।

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

परोपकारी मनुष्य अपना अनिष्ट करने वाले का भी भला ही करता है, उसके जीवन का मूलमन्त्र होता है–

जो तोको काँटा बोये, ताहि बोई तू फूल।

तोहि फूल को फूल हैं, वाको हैं तिरसूल॥

वास्तव में परोपकार करना ही जीवन है। क्षणिक स्वार्थ पूर्ति से दूर रहकर ही परोपकारी जीवन बिताना चाहिए।

पर उपकारी बनकर ही तो जीना जग में जीना है।

स्वार्थलीन पशु सम जी लेना भी जग में क्या जीना है॥

अबेकस- यू०पी० ओरियेन्टेशन कार्यक्रम

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद समारोह

‘अभिव्यक्ति’ : सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

'अभिव्यक्ति' : सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

महाविद्यालय की रोवर्स–रेंजर्स इकाई के विविध कार्यक्रम

महाविद्यालय की एन०एस०एस० इकाई के विविध कार्यक्रम

महाविद्यालय की एन०एस०एस० एवं रोवर्स-रेंजर्स इकाई के विविध कार्यक्रम

विश्वविद्यालय तथा राष्ट्रीयता

मानसी तिवारी
बी०ए० उत्तीर्ण 2021

यद्यपि विश्वविद्यालय शब्द प्रयोग की दृष्टि से भारत के लिए आधुनिक है परन्तु इसके शब्द एवं भावों से हम युगों से परिचित हैं। वैयाकरण पाणिनि की जन्मभूमि एवं पश्चिमोत्तर भारत में स्थित गंगाधर देश की राजधानी तक्षशिला ईसापूर्व चतुर्थ शताब्दी में भी सम्पूर्ण भारत के योग्य युवकों का आकर्षण केन्द्र बनी हुई थी। नालंदा, विक्रमशिला, धरणिकोट, काशी तथा नवदीप ऐसे सांस्कृतिक केन्द्र थे, जहाँ न केवल भारत प्रत्युत पूर्व-एशिया के सुदूर स्थित भागों से भी ज्ञान पिपासा कुलित छात्र बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित होते थे। समस्त शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के समुदाय से विनिर्मत यह विश्व एक प्रकार का संयुक्त जीवनयापन करता था। हमारी यही शिक्षाशालाएं उन्नत मस्तिष्क, उच्च आदर्श, धार्मिकता के विकास का मूल कारण थी। उन्हीं की सहायता से हम एक ऐसे समाज की सृष्टि करने में समर्थ हो सके थे, जिसे हम चाहें तो ''विश्वविद्यालय संसार'' कह सकते हैं, जहाँ सांस्कृतिक एकता थी, जहाँ मूलभूत विचारों एवं लक्ष्यों में सामंजस्य पाया जाता था। आज की परिवर्तित परिस्थिति में विश्वविद्यालय ही वह सत्ता है, जिसे विचारों एवं आदर्शों के क्षेत्र में नेतृत्व ग्रहण करना होगा।

न चौरहार्यं न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्द्धते एव नित्य विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्॥

मानवता का इतिहास दो प्रमुख मूल प्रवृत्तियों के निरन्तर संघर्ष का इतिहास रहा है, रक्षणवृत्ति तथा विकासवृत्ति। रक्षणवृत्ति हमारे प्राचीनतम प्रेम में प्रकाशित होती है, जो अपने अतीत से प्रेमपूर्वक चिपकी रहती है, घूमफिर कर अपने में ही वापस आ जाना चाहती है एवं उसी परिधि के भीतर एक अशिथिल बंधन में बँधी रहना चाहती है। विकासवृत्ति जीवन की हलचल में प्रकाशित होती है, उस आकांक्षा में जो समस्त मार्ग अवरोधों को घ्वस्त कर अपना मार्ग अबाधित कर लेना चाहती है।

प्रत्येक विस्तार युग के बाद संकोच युग आता है तथा प्रत्येक संकोच के बाद विस्तार। वैदिक ऋषियों का युग शक्ति एवं स्फूर्ति का युग था, जब भारत ने अपने अमर विचारों की घोषणा की। महाभारत में जीवन की उथल पुथल उसकी व्यग्रता तथा व्यस्तता का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है, स्वतन्त्र जिज्ञासा तथा प्रयोगों से ओतप्रोत। अपरिचित जातियों से देशों का आक्रान्त था। महाभारत के वर्णन से स्पष्ट होता है कि हमारी संस्कृति इतनी प्रबल थी कि उसने नवीन शक्ति, जो उसका विकास करने आई थीउसे भी अनुप्राणित कर दिया। हमारी प्राचीन समाज व्यवस्था ने घातक कानून को आत्सात कर लिया। भगवान् बुद्ध के समय जो विचार स्वतन्त्र की लहर उठी , उसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को अनेक प्रकार की रचनात्मक कृतियों से भर दिया तथा अपनी शक्ति से समस्त एशिया खण्ड को आप्लावित कर दिया। महान् सेनानी ''चन्द्रगुप्त'' ने तो प्राय: एक विस्तृत महाद्वीप को एकता के सूत्र में बाँध दिया।

अमर कीर्ति ''अशोक'' ने बौद्ध प्रचारकों को मिस्र तथा सीरिया, इपीरिस तक भेजा था। गुप्त तथा वर्धन काल में सर्वाधिक सांस्कृतिक विकास हुआ था। आजकल हम एक ऐसे युग में होकर जी रहे हैं। जब मानव समाज प्रतिक्रिया शक्ति की ठोकरें खाकर आगे की ओर नए वेग से बढ़ने को तत्पर है।

यदि विश्वविद्यालय को उस क्रान्ति में भाग लेना है, जिसे भारतीय नवजागरण का नाम दिया जा सकता है तो इसे अतीत के अध्ययन की ओर समुचित ध्यान देना होगा। हमारा देश कोई बालू से बना समुद्रतट तो नहीं है, जो हाल .... संस्कृति के मूल स्रोत, उसके विचार कला, उसके दर्शन एवं धर्म के प्रति अवश्य ही उत्सुकता जागृत करनी होगी।

विश्वविद्यालय शिक्षा की सार्थकता केवल ज्ञानअर्जन में नहीं अपितु वैज्ञानिक स्वभाव के सृजन में होती है। विद्यार्थी को मत एवं सिद्धान्त , वास्तविकता एवं कल्पना के अन्तर का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। उसमें प्राप्त सामग्री की छानबीन की सत्य खोजने की निपुणता होनी चाहिए, जिससे वह अपने विरोध को न्यायपूर्वक समीक्षा कर सके। गवेषणा बुद्धि इसी स्वतन्त्र अनुसन्धान तथा विवेकशील को क्रियान्वित करने का नाम है। विश्वविद्यालय की अपने इस समय लक्ष्य में सफलता एवं असफलता उसके विद्यार्थियों एवं अध्यापक पर निर्भर करती है। अध्यापक ही वातावरण की सृष्टि करते हैं, उनके निर्वाचन में बड़ी से बड़ी सावधानी कम है। अध्यापकों की नियुक्ति में उनकी योग्यता एवं गवेषणा को छोड़कर और किसी कारण से प्रभावित नहीं होना चाहिए क्योंकि जिसकी अनुसन्धान में अनुरक्ति नहीं उसका शिक्षण में उत्साह कैसे होगा। भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग जागृत करने का आशय यह कदापि नहीं कि हमें फिर सुदूर स्थित अतीत की परिस्थितियों में वापस लौट जाना चाहिए। अतीत कभी लौटता नहीं बल्कि हमें उससे कुछ ना कुछ सीखने को अवश्य मिलता है, केवल कौतूहल को शान्त करने वाला ज्ञान उस संस्कृति से बिल्कुल भी भिन्न है, जो व्यक्तित्व को परिमार्जित करती है।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरुत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो॥

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

कमल शुक्ल
बी०ए० प्रथम वर्ष

गुरु हमें ज्ञान देते हैं। लेकिन क्या गुरु मिल जाने से ही हमें ज्ञान प्राप्त हो जाता है, इसका उत्तर है, नहीं। क्योंकि गीता कहती है, ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें सरल बनना होगा और जितना हम जटिल होते जाते हैं, हम उतने ही संदेह से भर जाते हैं। इसलिए एक विद्यार्थी के जीवन में गुरु के प्रति श्रद्धा और भक्ति नितान्त आवश्यक है। श्रद्धा बड़ी सरलता है। श्रद्धा अतिसरलता है। अश्रद्धा के रास्ते पर कई सारे मतभेद–मनभेद और द्वन्द्व विद्यमान हैं, जिनमें तर्कों–कुतर्कों की अविराम श्रृंखला निरन्तर बहा करती है, जिससे एक सूक्ष्म अहंकार का अंकुर जन्म लेने लगता है, जिसके कारण व्यक्ति के जीवन से सुवास और सुन्दरता गायब हो जाती है। ऐसे अश्रद्धालुजनों का ज्ञान केवल स्वार्थ, नास्तिकता और निन्दा को ही जन्म दे सकता है। उससे न तो उसका हित हो सकता है और न ही समाज का। अतः विद्यार्थी को सदैव अपने अहंकार को गुरु चरणों में विसर्जित कर देना चाहिए। गुरुजनों के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए, तभी हम संशय से विमुक्त होकर विशुद्ध ज्ञान को प्रापत कर सकते है।

विद्यार्थी या परीक्षार्थी

कमल शुक्ल
बी०ए० प्रथम वर्ष

विद्यार्थी शब्द विद्या+अर्थी से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है विद्या अर्थात् ज्ञान को चाहने वाला। परन्तु आधुनिक परिवेश में इस सिद्धान्त से इतर धारणा दृष्टिगोचर होती है। आजकल अधिकांश विद्यार्थी एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने को ही विद्या या ज्ञान समझते हैं। उनके लिए यही विद्यार्थी की परिभाषा है। इसलिए बच्चे अज्ञानवश विद्यार्थी बनने के स्थान पर परीक्षार्थी बनते जा रहे हैं।

इसलिए परीक्षार्थी शिक्षा से आजीविका कमाना सीख रहा है। वह सीख रहा है कि धन कैसे कमाएं, मकान कैसे बनाना है। इससे ज्यादा उसके जीवन में कोई और मूल्य नहीं है। विद्यार्थी वह है जो आत्म–ज्ञान, आत्मबोध, आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं। इसलिए परीक्षार्थी की शिक्षा सीमित समय तक चलती है एवं विद्यार्थी की शिक्षा जीवन भर सतत् गतिमान रहती है।

विद्यार्थी ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है और परीक्षार्थी ज्ञान के सन्दर्भ में सूचनाओं को प्राप्त करना चाहता है क्योंकि विद्यार्थी की तृप्ति ज्ञान के सन्दर्भ में सूचनाओं से नहीं बल्कि ज्ञान के गहन अनुभव को प्राप्त कर लेने से है। ज्ञान और सूचना एक जैसे मालूम पड़ते हैं, एक जैसे नहीं हैं। ज्ञान वह, जो तुम्हें रूपान्तरित करे, सूचना वह, जो तुम्हारी स्मृति को भरे। सूचना तुम्हारी जानकारी को बढ़ाती है, ज्ञान तुम्हें बढ़ाता है।

परीक्षार्थी बिना झुके सीखना चाहता है, उसका समर्पण भाव औपचारिक होता है परन्तु विद्यार्थी अपने अहंकार को गुरु के चरणों में विसर्जित कर देता है। इसलिए परीक्षार्थी का शिक्षक से सम्बन्ध व्यावसायिक होता है, उसका सम्बन्ध मन के धरातल पर है। परन्तु इसके ठीक विपरीत विद्यार्थी का सम्बन्ध प्रेम का है, उसके तार हृदय से जुड़े होते हैं।

अतः हमारा ध्येय केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होना न हो अपितु अर्जित विद्या से (ज्ञान से) विद्यादान करना, विद्या का उपयोग राष्ट्र एवं धर्म के लिए करना चाहिए।

कविता

विशाल शुक्ल
बी०ए० तृतीय वर्ष

है शौक यही अरमान यही, हम कुछ करके दिखलायेंगे
मरने वाली दुनिया में हम, भारत माता के वीर सुपुत्र कहलायेंगे।

जिनको दुनिया ने सताया है, जिन पर न किसी की छाया है
हम उनको गले लगायेंगे, हम उनको खुशी दिलायेंगे।

रोको मत आगे बढ़ने दो, हम आजादी के दीवाने हैं
हम मातृभूमि की सेवा में अपना सर्वस्व लुटायेंगे।

हम उन वीरों के बच्चे हैं, जो धुन के पक्के सच्चे हैं
हम उनका मान बढ़ायेंगे, हम जग में नाम कमायेंगे।

मनुष्य जीवन का कारण क्या है?

अजय कुमार मिश्र
कार्यालय अधीक्षक

मनुष्य जीवन का कारण क्या है ? अध्यात्म पता न होने से यह प्रश्न लोगों के मन में रहता है। यदि भगवान ही सुख–दु:ख देते हैं, तो मेरा सभी से प्रश्न है कि सुख के समय कितने लोग भगवान के प्रति आभार अथवा कृतज्ञता व्यक्त करते हैं कि हे भगवान, आपकी कृपा के कारण ही यह सुख मेरे जीवन में आया है। बहुत ही कम लोग होंगे। फिर जीवन के दु:ख के लिए हमें भगवान को दोष देने का अधिकार है क्या ? वास्तव में भगवान न सुख देते हैं और न दु:ख। हमारे कर्म ही हमारे सुख और दु:ख का कारण होते हैं।

मनुष्य जन्म का कारण क्या है ? इसका शास्त्र अथवा नियम समझ लेते हैं। मनुष्य का पुन:–पुन: जन्म होने के विविध कारण हैं। इसके दो प्रमुख कारण हैं– पहला कारण है प्रारब्ध अर्थात् पिछले जन्म में किए अच्छे–बुरे कर्मों को भुगतना और सामान्य जीवनयापन करना।

दस सहस्त्र में से केवल एक जीव ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए जन्म लेता है। आनन्दप्राप्ति के लिए आध्यात्मिक उन्नति करता है। जिस आनन्दस्वरूप ब्रह्म से हमारी उत्पत्ति हुई है, उन तक पहुँचने का आकर्षण हर किसी में थोड़ा–बहुत तो रहता ही है। उन तक पहुँचने के लिए अर्थात् आनन्दप्राप्ति तथा ईश्वरप्राप्ति के लिए क्या करना आवश्यक है, यह अध्यात्मशास्त्र हमें सिखाता है।

कोई भी व्यक्ति हो, वह दु:ख की कामना कभी नहीं करेगा :

कोई भी व्यक्ति हो, वह दु:ख की कामना कभी नहीं करेगा। उसका प्रयास यही होता है कि कभी दु:ख न मिले, परन्तु उसके जीवन में अनेक बार दु:ख आते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के कथनानुसार, **कन सम दु:ख लागै अति भारू। सुख सुमेर सम, तदपि खभारू ॥** अर्थात् कण भर का (छोटा सा) दु:ख भी बहुत भारी लगता है, जबकि पर्वत समान सुख छोटा लगता है। अनेक लोगों ने यह अनुभव किया होगा। सामान्यत: मानव जीवन में सुख 25 प्रतिशत और दु:ख 75 प्रतिशत होता है। अधिकांश लोगों को नहीं पता होता है कि आनन्द की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? इसलिए प्रत्येक व्यक्ति पंच ज्ञानेन्द्रिय, मन एवं बुद्धि द्वारा कुछ समय के लिए ही सही, सुख पाने का प्रयत्न करता है। जैसे स्वादिष्ट व्यंजन कासेवन करना आदि। उसके साथ ही दु:ख दूर करने का भी प्रयत्न करता है। जैसे व्याधिग्रस्त होने पर औषधि लेकर, बिगड़े हुए दूरदर्शन यन्त्र को ठीक करवा कर आदि।

युवा अध्यात्म के सन्दर्भ में क्या सोचते हैं?

युवाओं को अध्यात्मक की बातें पिछड़ी लगती है। उन्हें लगता है कि यह कोई आयु है भगवद् भजन करने की। किसी के मन में सहज यह प्रश्न उठ सकता है कि वैज्ञानिक युग में रहते हुए आधुनिक विज्ञान को छोड़कर, अध्यात्मशास्त्र का अभ्यास क्यों

करना चाहिए अर्थात् चक्र को उल्टा घुमाना क्यों आवश्यक है? 'सोना कभी पुराना नहीं होता', इस कहावत के अनुसार आध्यात्मिक उन्नति के लिए विज्ञान नहीं, अध्यात्मशास्त्र ही उपयुक्त है। इस तथ्य को समझने के लिए विज्ञान एवं अध्यात्मक के कुछ तुलनात्मक सूत्रों पर (मुद्दों पर) हमें ध्यान देना होगा।

1. विज्ञान की व्याख्या क्या है? 'विगतं ज्ञानं यस्मात् तत्।' अर्थात् जिसमें से ज्ञान निकाला गया हो, वह है विज्ञान, ऐसी है विज्ञान की विनोदी किन्तु अर्थपूर्ण व्युत्पत्ति। 'सा विद्या या विमुक्तये।' अर्थात् जो मुक्ति दिलाए, उसे ही विद्या / ज्ञान कहते हैं। ऐसा ज्ञान केवल अध्यात्मकशास्त्र से मिलता है।

2. दूसरा भेद है, विज्ञान के सत्य में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। विज्ञान की पुस्तकों के संशोधित संस्करण छापने पड़ते हैं। संक्षेप में विज्ञान अपूर्ण एवं असत्य का शास्त्र है। इसके विपरीत आत्मज्ञान में परिवर्तन नहीं होता है। अध्यात्म के शोध से प्राप्त सत्य त्रिकाल अबाधित एवं शाश्वत होता है। इसीलिए वेद, उपनिषद के आदि के पुनर्मुद्रण होते हैं, संशोधित संस्करण कभी नहीं होते।

3. तीसरा भेद है, विज्ञान द्वारा जो इस जन्म में अनुभव द्वारा सीखा है, अगले जन्म में वही पुन: सीखना पड़ता है, उदाहरण– पढ़ाई–लिखाई। परन्तु अध्यात्म में जो इस जन्म में अनुभूति द्वारा सीखा है, वह अगले जन्म में भी ज्ञात रहता है।

समाज के अनेक लोग पैसा, गाड़ी, बंगला जैसे साधन होने पर भी सुखी नहीं हैं। विज्ञान द्वारा की गई भौतिक प्रगति के कारण सुख भोगने के अनेक साधन उपलब्ध हैं परन्तु वे केवल तात्कालिक सुख देते हैं। विज्ञान चिरकालीन सुख अर्थात् आनन्द नहीं दे सकता, इसलिए अध्यात्म ही आवश्यक है, यह बात अब भी समाज के अनेक लोगों की समझ में नहीं आती। यह समझाने के लिए अध्यात्म की जानकारी लेना आवश्यक है। इसलिए अपने व्यावहारिक लाभ के लिए साधना के साथ–साथ विज्ञान का उपयोग अवश्य करें। हमें जीवन का वास्तविक आनन्द लेना हो और उसके रहस्यों को समझना हो तो अध्यात्म के सिवाय सम्भव नहीं है।

अब युवाओं की दृष्टि से देखें तो प्राचीन काल में हमारे धर्मशास्त्र में चार आश्रम होते थे– ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम। इसमें बचपन से युवावस्था तकगुरुकुल में ही हमारे धर्मशास्त्र का अध्ययन हो जाता था। उसी से जीवन का महत्व और जीवन का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता था। उसके उपरान्त गृहस्थाश्रम में संसार करना और फिर वानप्रस्थाश्रम में त्याग की भावना सिखाई जाती थी। इस कारण मनुष्य मायाजाल में न फंसकर वर्तमानकाल में जीता था। आज भी आप देखेंगे तो कोई भी प्राणी पक्षी अपने घर में कोई भी वस्तु संचय करके नहीं रखता है। जबकि मानव सबसे बुद्धिमान होते हुए भी संचय करने में ही पूरा जीवन लगा देता है। सभी जानते हैं कि एक दिन हमें फ्लैट, बंगला, फार्म हाउस, गाड़ी, आलीशान ऑफिस सबकुछ छोड़कर जाना है, कुछ भी साथ नहीं जाने वाला है, फिर भी पूरा जीवन उसी में लगा देते हैं। यदि युवावस्था में ही यह बात ध्यान में आ जाए तो मुझे यह चाहिए, वह चाहिए, यह विचार करते रहना और यदि नहीं मिले तो निराशा, तनाव, चिंता, आत्महत्या के विचार, शारीरिक व्याधियाँ इत्यादि संकट में हम नहीं फंस सकते। इस कारण मनुष्य को युवावस्था में ही कर्म प्रारब्ध और जीवन का उद्देश्य जानने के लिए अध्यात्म ही मार्गदर्शन कर सकता है।

छात्र जीवन में लाइब्रेरी का महत्व

अंकुर मिश्र
पुस्तकालयाध्यक्ष

लाइब्रेरी किसे कहते हैं?–

लाइब्रेरी को पुस्तकालय भी कहते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण संसाधन है। ऐसी बहुत सी पुस्तकें होती हैं, जो बहुत कीमती और दुर्लभ होती हैं। हर व्यक्ति उन्हें खरीद नहीं सकता। इस तरह की पुस्तकें हमें लाइब्रेरी में आसानी से मिल जाती हैं। लाइब्रेरी में हजारों–लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें होती हैं। पढ़ने वालों के लिए यह किसी स्वर्ग से कम नही होता।

लाइब्रेरी का एक बहुत बड़ा लाभ है कि किसी विषय पर सैकड़ों पुस्तकें मिल जाती हैं, जिससे विद्यार्थी अच्छे नोट्स बनाकर अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। आजकल लाइब्रेरी का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। डिजिटल क्रान्ति आने के बाद ऑनलाइन लाइब्रेरी की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

लाइब्रेरी का उद्देश्य –

लाइब्रेरी का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध कराना होता है, जिससे वह अच्छे से पढ़ाई कर सकें। लाइब्रेरी मुफ्त में पुस्तकें उपलब्ध कराती है, जिससे विद्यार्थियों को को बहुत लाभ होता है।

लाइब्रेरी के महत्व को प्राचीनकाल में ही समझ लिया गया था। इस तरह विश्व में अनेक प्राचीन लाइब्रेरी हैं। यदि छात्र–छात्राओं के पास पुस्तकें ही नहीं होंगी तो वह अध्ययन कैसे करेंगे? इस आवश्यकता के दृष्टिगत ही लाइब्रेरी (पुस्तकालय) की स्थापना की गई थी।

लाइब्रेरी से अनेक लाभ हैं। कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं–

सरलता से पुस्तकें उपलब्ध होना–

लाइब्रेरी का बड़ा लाभ यह है कि किसी भी विषय की पुस्तक को आप सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। सभी विद्यालयों–महाविद्यालयों में लाइब्रेरी होती है, जहाँ पर एक बार में दो या तीन पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकों का अध्ययन कर हम उन्हें पुस्तकालय को वापस करते हैं और दूसरी पुस्तक उसके स्थान पर ले सकते हैं।

इस तरह कोई भी व्यक्ति सैकड़ों पुस्तकों का अध्ययन कर सकता है। पुस्तकालय में किसी भी पुस्तक का कई घण्टों तक अध्ययन कर सकते हैं। किसी भी प्रकार की कोई रोक–टोक नहीं होती है।

दुर्लभ पुस्तकों के अध्ययन का अवसर–

लाइब्रेरी में हर प्रकार की नई–पुरानी एवं दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध होती हैं। ऐसी बहुत सी पुस्तकें हैं, जो बाजार में सरलता से उपलब्ध नहीं होती हैं। उन्हें क्रय करने के लिए बहुत भटकना पड़ता है। इस तरह की पुस्तकें भी लाइब्रेरी में सरलता से उपलब्ध

होती हैं।

निर्धन छात्र-छात्राओं को लाभ-

देश में ऐसे बबहुत से विद्यार्थी हैं, जिनके पास पुस्तकें खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता। आजकल तो पुस्तकें बहुत महंगी मिलती हैं। ऐसी स्थिति में लाइब्रेरी वरदान साबित होती है।

वहाँ पर कोई भी विद्यार्थी किसी भी पुस्तक को पढ़ सकता है और उसे निर्गत कराकर घर भी ले जा सकता है, जो उसके समग्र अध्ययन में सहायता करती है। इसलिए लाइब्रेरी निर्धन छात्रों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

अच्छे नोट्स बनाने में सहायक-

लाइब्रेरी में जाकर विभिन्न पुस्तकों से अध्ययन कर विद्यार्थी अच्छे नोट्स बना सकते हैं और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर अपना भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं। अध्ययन के लिए अच्छी पुस्तकों का होना अति आवश्यक है।

एक विषय पर अनेक पुस्तकों की उपलब्धता -

लाइब्रेरी में एक ही विषय की बहुत सी पुस्तकें प्राप्त हो जाती हैं, जिनकी सहायता से छात्र एक विशिष्ट अध्ययनपरक सामग्री प्राप्त करते हैं। वे अच्छे नोट्स भी बना पाते हैं। यदि एक विषय की एक ही पुस्तक होगी तो ऐसा सरलता से नही हो पायेगा। बहुत सी पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञान की वृद्धि होती है और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं।

शान्त वातावरण -

लाइब्रेरी ऐसा स्थान होता है , जहाँ शान्ति होती है। लोग केवल अध्ययन करते हैं। इसलिए यदि आपको शान्ति चाहिए और पढ़ना चाहते हैं तो लाइब्रेरी सबसे अच्छा स्थान है। अधिकांश घरों में लोगों की संख्या ज्यादा होती है। पारिवारिक सदस्य हमेशा आपस में बात करते रहते हैं। ऐसे में लोगों को पढ़ने का अवसर कम प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए लाइब्रेरी एक सुगम स्थान है।

अच्छी पुस्तकों की प्राप्ति-

लाइब्रेरी में बहुत सी अच्छी पुस्तकें होती हैं, जिन्हें विद्यार्थी आसानी से लेकर पढ़ सकते हैं। ये पुस्तकें उन्हें पुस्तकालय नियमों के अन्तर्गत बिना किसी मूल्य के प्राप्त हो जाती हैं।

यदि सभी लाइब्रेरी को समाप्त कर दिया जाए तो विद्यार्थियों की पढ़ाई पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। उन्हें अध्ययन हेतु अच्छी पुस्तकें नहीं मिल पायेंगी और परीक्षा में अच्छे अंक भी नहीं प्राप्त होंगे।

लाइब्रेरी मानव इतिहास की रक्षा करती है -

सभी प्रकार की घटनाएं एवं ज्ञानवर्द्धक तथ्यों को इतिहास की पुस्तकों में अंकित की जाती हैं। इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि पुस्तकें हमारे इतिहास की रक्षा करती हैं।

लाइब्रेरी में हजारों पुस्तकें सुरक्षित एवं संरक्षित रहती हैं। इसलिए मनष्य का ज्ञान, उसकी संस्कृति और उसकी सारी घटनाओं को लाइब्रेरी सुरक्षित रूप में रखती है, जिससे भविष्य की पीढ़ी को पुराने समय के बारे में पता चल सके।

प्रकृति प्रदत्त शिक्षा

शिवशरण त्रिपाठी
कम्प्यूटर ऑपरेटर

संसार में दो प्रकार के पेड़-पौधे होते हैं।

प्रथम – जो अपना फल स्व्यं दे देते हैं। जैसे- आम, अमरुद, केला इत्यादि।

द्वितीय – जो अपना फल छिपाकर रखते हैं। जैसे- आलू, अदरक, प्याज इत्यादि।

जो फल अपने आप दे देते हैं, उन वृक्षों को सभी खाद-पानी देकर सुरक्षित रखते हैं और ऐसे वृक्ष फिर से फल देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

किन्तु जो वृक्ष या पौधे अपना फल छिपाकर रखते हैं, वे जड़ सहित खोद लिए जाते हैं और उनका अस्तित्व ही खत्म हो जाता है।

ठीक इसी प्रकार, जो व्यक्ति अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वयं ही समाजसेवा में, समाज के उत्थान में लगा देते हैं, उनका सभी ध्यान रखते हैं और वे मान-सम्मान पाते हैं।

वहीं दूसरी ओर, जो अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वार्थवश छिपाकर रखते हैं, किसी की सहायता से मुख मोड़े रहते हैं, वे जड़ सहित खोद दिए जाते हैं अर्थात् समय रहते ही भुला दिए जाते हैं।

प्रकृति कितना महत्वपूर्ण सन्देश देती है, बस समझने, सोचने और कार्य में परिणित करने की आवश्यकता है।

हृदयस्पर्शी कविता

विनोद कुमार कुशवाहा
दफ्तरी

जब तक चलेंगी जीवन की साँसें
कहीं प्यार, कहीं टकराव मिलेगा।
कहीं बनेंगे सम्बन्ध मन से तो
कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा।
कहीं मिलेगी जीवन में प्रशंसा तो
कहीं नाराजगियों का बहाव मिलेगा।
कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ तो
कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा।
कहीं बनेंगे पराये रिश्ते भी अपने तो
कहीं अपनों से ही खिंचाव मिलेगा।
कहीं होंगी खुशामदें चेहरे पर तो
कहीं पीठ पर बुराई का घाव मिलेगा।
तू चलाचल राही अपने पथ पर
जैसा तेरा भाव, वैसा प्रभाव मिलेगा।
रख स्वभाव में शुद्धता का 'स्पर्श' तू
अवश्य ही जीवन का पड़ाव मिलेगा।

वैश्विक ज्ञान-विज्ञान का मूल उत्स संस्कृत-वाङ्मय

डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री
सहायक आचार्य, संस्कृत

ज्ञान-ज्ञानेन्द्रियों से बौद्धिक अनुभव को ज्ञान कहते हैं। ज्ञान प्राप्ति के निमित्त बुद्धि का होना परम आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष अनुभव प्रायोगिक कौशल और जानकारी के द्वारा किसी तथ्य, तत्त्व अथवा वस्तु से परिचित होना ही ज्ञान है।

विज्ञान- वह व्यवस्थित ज्ञान या विद्या है, जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोग से मिलती है, जो किसी अध्ययन के विषय की प्रकृति या सिद्धान्तों को जानने के लिए किए जाते हैं, अर्थात् विज्ञान प्रकृति का विशेष ज्ञान है। यद्यपि मनुष्य प्राचीन समय से ही प्रकृति सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करता रहा है, फिर भी विज्ञान आर्वाचीन काल की देन है। इसी युग में इसका आरम्भ हुआ और थोड़े ही समय के अन्दर इसने इतनी बड़ी उन्नति कर ली है। इस प्रकार संसार में बहुत बड़ी क्रान्ति हुई और एक नई सभ्यता का निर्माण हुआ, जो विज्ञान पर आधारित है।

वेद समूचे ज्ञान-विज्ञान की आधारभित्ति है, अर्थात् विश्व का जितना भी ज्ञान-विज्ञान है, उनका मूल उत्स वेदों में पाया जाता है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान किसी भी तत्त्व का बीज वेदों में खोजने का प्रयास करते हैं, क्योंकि वैदिक वाङ्मय में भारतीय दर्शन, व्याकरण, भाषा विज्ञान, साहित्य, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद, स्वास्थ्य विज्ञान, ज्योतिष एवं नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान आदि के बीज सिद्धान्त रूप में उपलब्ध हैं। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्नातक संस्कृत के पाठ्यक्रम (मेजर/माइनर विषय के रूप में) में उपरोक्त विषयों को रखा गया है, जिससे कि छात्र सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्व एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने-समझने योग्य हों। संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण इत्यादि) से सुपरिचित होकर संस्कृत मर्मज्ञ बन सकें और उनमें संस्कृत व्याकरण के विभिन्न अंगों द्वारा भाषा के शुद्ध अध्ययन, लेखन एवं उच्चारण माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास हो। आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, नित्यनैमित्तिक कर्मकाण्ड इत्यादि के माध्यम से जीविकोपार्जन के योग्य बन सकें। वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य के समृद्धता एवं तद्निहित नैतिकता व आध्यात्मिकता को अनुभूत कर भारतीय संस्कृति के महत्व को वैश्विक स्तर तक पहुँचाने में सक्षम हों। धर्म-दर्शन, आचार-व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बन सकें तथा समसामायिक समस्याओं के समाधान के रूप में निबद्ध सर्वांगीणता के प्रति उनकी शोधपरक दृष्टि का विकास होगा। इस प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण होगा। इसीलिए कहा गया है कि ईष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट निवारण का जो अलौकिक उपाय बतलाते हैं, वे वेद हैं- '**इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं वेदयति यो ग्रन्थोऽसौ वेदः।**' सामान्य भाषा में वेद का अर्थ होता है- ज्ञान। वेद पुरातन विज्ञान का अथाह भण्डार है। इसमें मानव की हर समस्या का समाधान है। वेदों में ब्रह्म, ईश्वर, देवता, ब्रह्माण्ड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल,

धार्मिक नियम, इतिहास, रीति–रिवाज आदि लगभग सभी विषयों से सम्बन्धित ज्ञान भरा पड़ा है। इस प्रकार ज्ञान–परम्परा में संस्कृत–वाङ्मय का असीम योगदान है, अतः कह सकते हैं कि सम्पूर्ण ज्ञान–परम्परा के मूल बीज संस्कृत–वाङ्मय में विद्यमान है। इसलिए यदि छात्र स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय का चयन करता है तो न केवल जीविकोपार्जन को प्राप्त करेगा, अपितु पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ मानव जीवन के परम साध्य को प्राप्त कर परम शान्ति की अनुभूति भी करेगा।

खाने-पचाने में नायाब गुणों की खान हैं मोटे अनाज

डॉ० दिव्या भदौरिया
वनस्पति विज्ञान विभाग

बात में है दम, तभी तो जीते हैं हम। हाँ, इसीलिए भारत के प्रस्ताव पर 72 देशों के समर्थन के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने साल 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय पोषक अनाज यानी मोटे अनाज का वर्ष घोषित किया है। हम अनाज की बात करें तो इसका मोटा रूप बहुत गुणों से भरा हुआ है। पोषण का खजाना लिए मोटे अनाजों को अब 'श्री अन्न' के नाम से जाना जाएगा। इसे अब सिर्फ हम ही नहीं, दुनिया भी मान रही है। हम इनके नामों से खूब परिचित हैं, मौसम बदलता है जो ज्वार, बाजरे और मक्के की रोटी को शौक से खाते भी हैं, लेकिन इनके गुणों से अपरिचति हैं। इनके अलावा जौं, कोदो, कुटकी, रागी और समा आदि भी मोटे अनाज में शामिल है। मोटे अनाज से हम सदियों से वाकिफ हैं। चलिए, एक बार फिर इसको खूबियों के जरिए समझते हैं, क्योंकि पिछले कुछ समय से हमने इन्हें बिसरा दिया था। गुणों की खान मोटे अनाज की सबसे बड़ी खासियत है, इनमें पाया जाने वाला रेशा, जो काफी मात्रा में मौजूद होता है। इस रेशे के घुलनशील और अघुलनशील दोनों ही रूप हमारे शरीर में पाचन तन्त्र के लिए वरदान की तरह काम करते हैं। घुलनशील रेशा पेट में कुदरती तौर पर मौजूद बैक्टीरिया के सहयोग से पाचन को बेहतर बनाता है। वहीं अघुलनशील रेशा पाचन तन्त्र से मल को इकट्ठा करने और उसकी आसान निकासी में मदद करता है। यह पानी भी खूब सोखता है यानी व्यक्ति को मोटा अनाज खाने के बाद प्यास भी खूब लगती है, जो पाचन तन्त्र के लिए बहुत स्वास्थ्यकर है।

इसका मतलब यह हुआ कि महीन अनाज खाने और व्यायाम से दूर रहने के चलते जो कब्जियत और शरीर के फूलने जैसी बिन बुलाई बीमारियाँ हम झेलते हैं, मोटा अनाज उनका सटीक उपचार है। गेहूँ में मिलने वाला प्रोटीन 'ग्लूटेन' इन अनाजों में नहीं होता, सो इनसे पाचन अच्छा रहता है। कैलोरीज और प्रोटीन की अनियमितता वाले कुपोषण के बारे में हम जानते हैं लेकिन सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी एक तरह का कुपोषण उत्पन्न करती है, जिसका आसानी से पता नहीं चलता। इसका अर्थ है आयरन, कैल्शियम, विटामिन बी जैसे पोषक तत्वों की कमी। उन व्यस्कों और बच्चों में यह कमी आम है, जो आटा या मैदे का उपयोग करते हैं। मोटे अनाज इन सूक्ष्म तत्वों के अच्छे स्रोत हैं। पोषक तत्वों के भण्डार मोटे अनाज को सुपरफूड भी कहा जाता है। बीटा-कैरोटीन, नायासिन, विटामिन बी-6, फोलिक एसिड, पोटेशियम, मैग्नीशियम, जस्ता आदि से भरपूर इन अनाजों के सेवन से कई तरह के फायदे होते हैं।

मोटे अनाजों की खेती करना भी बड़ा आसान है। इनके पौधों में सूखा सहन करने की क्षमता अधिक होती है और फसल के पकने की अवधि कम होती है। उर्वरक, खाद की कम माँग से लागत कम व रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। इसको घास की तरह उगने वाला अनाज भी कहा जाता है, क्योंकि ये तेजी से बढ़ जाते हैं और इनके लिए बहुत अधिक संसाधनों की भी जरूरत नहीं होती। इन पौधों में ये अनाज छोटे-छोटे दानों के रूप में मिलता है, जिसका चाहे दानों के रूप में इस्तेमाल हो या आटे

के रूप में या चीला बनाने या खीर या लड्डू बनाने में। ये हमारी सेहत के लिए सोने सा काम करते हैं।

भारत के लगभग 21 राज्यों में विभिन्न मोटे अनाजों की खेती की जाती है। जबकि विश्व के 131 देशों में किसी न किसी रूप में मोटे अनाजों की खेती होती है। वर्ष 2019 के आंकड़ों के अनुसार विश्व में अफ्रीका में 489 लाख हेक्टेयर, अमेरिका में 53 लाख हेक्टेयर और एशिया में 162 लाख हेक्टेयर में मोटे अनाजों की खेती होती है। इसमें अकेले भारत में 138 लाख हेक्टेयर भूमि पर मोटे अनाजों की खेती की जा रही है। सम्पूर्ण एशिया एवं अफ्रीका के देशों में 59 करोड़ लोग आज भी परम्परागत रूप से मोटे अनाज को अपन भोजन में शामिल करते हैं। देश के पाँच प्रमुख राज्यों में क्रमश: राजस्थान में बाजरा–ज्वार, कर्नाटक में ज्वार–रागी, महाराष्ट्र में रागी–ज्वार और उत्तर प्रदेश व हरियाणा में बाजरा की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

मोटे अनाज स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए आज मोटे अनाज को सुपरफूड और पोषक अनाज कहा जा रहा है। बाजरा जैसे मोटे अनाज को भविष्य का अनाज तक कहकर सम्बोधित किया जा रहा है। इससे बखूबी यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि मोटे अनाज स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से आने वाले भविष्य में कितना महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखते हैं। भारत में बाजरा, ज्वार, सवा, कुटकी, कोदो, रागी, कंगनी, चीना, कुट्टू एवं चौलाई प्रमुख रूप से, मेजर एवं माइनर मोटे अनाज पैदा किए जाते हैं। वित्त मन्त्री ने बजट पेश करते हुए मोटे अनाजों पर कहा, ''मोटे अनाज जिसे श्रीअन्न भी कहते हैं, इसे भी बढ़ावा दिया जा रहा है। हम दुनिया में श्रीअन्न के सबसे बड़े उत्पादक और दूसरे सबसे बड़े निर्यातक हैं। छोटे किसानों ने नागरिकों की सेहत को मजबूत करने के लिए श्रीअन्न उगाया है और बड़ी भूमिका निभाई है। सरकार कपास की प्रोडक्टिविटी बढ़ाने के लिए पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप को बढ़ावा देगी। इससे किसानों, सरकार और उद्योगों को साथ लाने में मदद मिलेगी।''

बाजरा (Pearl Millet) Botanical Name : *Pennisetum glaucum*

बाजरा एक सबसे ज्यादा उगाए और खाए जाने वाला मोटा अनाज है, जिसकी सबसे ज्यादा खेती भारत और अफ्रीका में की जाती है। बाजरा को कई इलाकों में बजरी और कंबू के नाम से भी जानते हैं। बाजरा को हर तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है। कम सिंचाई वाले इलाकों के लिए बाजरा की फसल वरदान है।

इससे मोटे दानों को अलग करने के बाद पशु चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इतना ही नहीं, बाजरा के फसल अवशेषों से जैव ईधन भी बनाया जाता है। प्रोटीन, फाइबर, अमीनो एसिड समेत कई न्यूट्रिएण्ट से भरपूर इस मिलेट से ब्रेड, दलिया, कुकीज समेत कई व्यंजन बनाए जाते हैं।

रागी (Finger Millet) Botanical Name : *Eleusine coracana*

रागी को देशी भाषा में नचनी भी कहते हैं। इस अनाज को रंग लाल–भूरा और स्वाद अखरोट जैसा होता है। रागी को भी सूखा और कम पानी वाले इलाकों में उगाया जा सकता है। यह अनाज हर तरह की मिट्टी में पैदा होकर भी प्रोटीन, विटामिन, आयरन, कैल्शियम और विटामिन बी जैसे कई गुणों से भरपूर होता है। इसके नियमित सेवन से डायबिटीज और ब्लड प्रेशर जैसी

बीमारियों को कंट्रोल कर सकते हैं। आज भारत के साथ-साथ पूरे एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में रागी की खेती की जा रही है।

कंगनी (Foxtail Millet) Botanical Name : *Setaria italica*

कंगनी को एशियाई देशों में उगाया जाता है। इस मिलेट का दाना पीला होता है, जिसे दलिया से लेकर पुलाव जैसे कई व्यंजन बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। कम बारिश वाले इलाकों में उगने वाली कंगनी प्रोटीन, फाइबर, आयरन, पोटेशियम और मैग्नीशियम से भरपूर होती है। कंगनी का स्वाद भी काफी हद तक अखरोट की तरह ही होता है।

चेना (Proso Millet) Botanical Name : *Amorphophallus paeoniifolius*

चेना एक ऐसा मोटा अनाज है, जो पूरी दुनिया में उगाया जाता है। भारत के साथ-साथ यूरोप, चीन और अमेरिका में इससे सूप, दलिया और नूडल बनाए जाते हैं। यह मिलेट फैट और कोलेस्ट्राल फ्री होता है। साथ ही चेना प्रोटीन, फाइबर, विटामिन बी, आयरन और जिंक समेत कई विटामिन और खनिजों का मेन सोर्स है।

सांवा (Barnyard Millet) Botanical Name : *Echinochloa frumantacea*

सांवा को देश के अलग-अलग इलाकों में ऊडालू या झंगोरा के नाम से भी जानते हैं। सांवा का इतिहास भी बाकी मोटे अनाजों की तरह हजारों साल पुराना है। इसमें मौजूद पोषक तत्व फाइबर, प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम और विटामिन बी आदि शरीर को खास एनर्जी देते हैं। इसके नियमित सेवन से सूजन, हार्ट डिजीज, और डायबिटीज का खतरा भी कम होता है। किसान भी सांवा उगाना बेहद पसंद करते हैं क्योंकि इसमें कीट या बीमारियाँ लगने का खतरा नहीं रहता।

ज्वार (Great Millet or Indian Millet) Botanical Name : *Sorghum bicolor*

मिनरल, प्रोटीन, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, कैल्शियम और आयरन समेत कई पोषक तत्वों से भरपूर ज्वार के दानों को लोग भूनकर खाते हैं। ज्वार के आटे से बना काजल आँखों को ठण्डक देता है और कई रोगों को भी दूर करता है। खांसी-जुकाम होने पर ज्वार के दानों को गुड़ में मिलाकर खाया जाता है।

कुटकी (Little Millet) Botanical Name : *Panicum sumatrense*

कुटकी के ज्यादातर गुण चेना से मिलते हैं। इसकी खेती करना किसानों के लिए जितना आसान है, इसके सेवन से भी उतने फायदे होते हैं। कुटकी की फसल 65 से 75 दिनों में पक जाती है। कैंसर जैसी गम्भीर बीमारियों से लेकर डायबिटीज को कण्ट्रोल करने में कुटकी को असरदार माना जाता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की मात्रा भी अधिक होती है।

कोदो (Kodo Millet) Botanical Name : *Paspalum scrobiculatum*

कोदो एक पारम्परिक अनाज है, जिसे केद्रव भी कहते हैं। औषधीय गुणों से भरपूर कोदो के दाने में कैंसर, मधुमेह और पेट के रोग दूर करने की शक्ति है ही तथा इसमें मौजूद प्रोटीन, फाइबर और कार्बोहाइड्रेट शरीर को हेल्दी रखने में मदद करते हैं।

G-20 शिखर सम्मेलन की एक झलक

डॉ० दिनेश कुमार गौतम
असि० प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

विश्व अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्रमुख आर्थिक मुद्‌दो पर विचार विमर्श तथा नीतिगत निर्णय के लिए विश्व के औद्योगिक तथा विकासशील देशो को एक मंच पर लाना रहा है। यह विश्व का सबसे बड़ा तथा प्रमुख मंच है, जिसका प्रयोग भारत विश्व के अन्य देशो के साथ विचार–विमर्श, विचारों के आदान–प्रदान तथा पारस्परिक सहयोग विकसित करने के लिए करता है, जिससे विश्व में स्थायित्व, सतत आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास कायम रख सके।

G-20 दुनिया के बीस प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के वित्त मन्त्रियों एवं केन्द्रीय बैंक के गवर्नरों का एक संगठन है, जिसमें 19 देश एवं यूरोपिय संघ शामिल हैं। इसे बीस प्रमुख देशो के वित्त मन्त्रियों तथा केन्द्रीय बैंक के गवर्नरों का समूह भी कहा जाता है। ये ऐसे देश हैं, जिनका सकल विश्व उत्पाद (GWP) में हिस्सा 85 प्रतिशत, विश्व व्यापार में हिस्सा 80 प्रतिशत तथा कुल विश्व जनसंख्या में हिस्सा 67 प्रतिशत है। G-20 की स्थापना वर्ष 1997 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद हुई थी लेकिन इसके पीछे 1975 में बने G-7 इनमें अमेरिका, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और कनाडा यह तात्कालिक समय के सबसे अमीर देशों का संगठन था। इसकी सालाना बैठकों में अर्थनीति के साथ–साथ राजनीति और सुरक्षा से जुड़े मसलो पर भी चर्चा होती थी लेकिन अमीर आदमी को हमेशा यह फिक्र बनी रहती हैं कि उसके आस–पास अमन चैन है या नहीं। उसी तरह जुलाई 1997 के एशियाई मुद्रा संकट के बाद इन अमीर देशों को यह चिन्ता सताने लगी कि ऐसे मुसीबत को कैसे कम किया जाये। यह विचार भी बना कि शायद दुनिया के आर्थिक वर्तमान और भविष्य की फिक्र करते वक्त उन देशों को भी साझेदार बनाना जरूरी होगा, जो आर्थिक नक्शे पर तेजी से अपनी पहचान बना रहे हैं। तभी G-7 एवं रुस को सम्मिलित के बाद G-8 हो गया। .... की पहल पर G-20 की शुरूआत हुई। 1997 में बर्लिन में बैठक के बाद 26 सितम्बर 1999 में G-20 की स्थापना हुई। इसके प्रथम अध्यक्ष कनाडा के पाल मार्टिन बनाये गये। G-20 शिखर सम्मेलन के इतिहास में 17 साल बाद भारत को इसकी मेजबानी का मौका मिला। वर्तमान में इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं। भारत 16 नवम्बर 2022 से 30 सितम्बर 2023 तक इसका अध्यक्ष बना रहेगा। जबकि 17 वां शिखर सम्मेलन इण्डोनेशिया की राजधानी बाली में 16 नवम्बर 2022 में हुआ जबकि 19 वां शिखर सम्मेलन ब्राजील में जुलाई 2024 में होगा।

भारत में G-20 18वाँ शिखर सम्मेलन की मेजबानी में 50 से अधिक प्रमुख शहरों में 100 से अधिक बैंठकों का आयोजन किया जा रहा है। इसकी पहली बैठक पं० बंगाल की राजधानी कोलकाता में दिनांक 09/01/2023 से 11/01/2023 तक तीन दिवसीय बैठक सम्पन्न हुआ है। फरवरी में उ०प्र० के तीन प्रमुख शहरों में आगरा, लखनऊ एवं ग्रेटर नोएडा में कुल 9 से अधिक बैठकें सम्पन्न हुई। इस प्रकार साल की शुरूआत से अब तक कोलकाता, पुणे, तिरुवनंतपुरम्, चण्डीगढ़, जोधपुर, चेन्नई,

गुवाहाटी, बंगलुरू, कच्छ, केरल, इन्दौर, लखनऊ, आगरा एवं ग्रेटर नोएडा जैसी जगहो पर 1 मार्च 2023 तक कई बैठको का दौर हो चुका है। जबकि अन्तिम दौर सितम्बर 2023 में नई दिल्ली में बैठक होगा।

भारत के सामने G-20 की अध्यक्षता और मेजबानी होना भारत के लिए जितनी बड़ी चुनौती खड़ी करता है, शायद उतना ही बड़ा मौका भी साबित हो सकता है। जहां भारत अमीर एवं गरीब राष्ट्रों के बीच पुल का कार्य कर सकता है, यहां न सिर्फ दुनियां की समस्या सुलझने की उम्मीद है बल्कि वैश्विक शक्ति समीकरण में खुद भारत के लिए एक बेहतर भूमिका की गुंजाइश भी साफ दिखाती है।

भारत देश में G-20 की 50 से अधिक शहरों में जो 100 सौ से अधिक बैठकें हो रही हैं, इससे भारत की एक तो हैसियत बढ़ने का अर्थ यह होगा कि दुनिया को आर्थिक नीतियों में अपने हिसाब से फेरबदल के लिए दबाव बनाना आसान हो जायेगा, दूसरा 50 से अधिक शहरो में दो से अधिक बैठकें का अर्थ एक तरह से इन शहरों का उनकी सांस्कृतिक सम्पदा और भारत के तमाम किस्म के उत्पादों का पूरी दुनिया में प्रचार–प्रसार भी होगा। यह वैसा ही होगा, जैसे यूरोप में स्विटजरलैण्ड या नीदरलैण्ड में भारतीय फिल्मों की शूटिंग से इन देशो के पर्यटन उद्योग को लम्बे समय तक फायदा होता रहा है, जो दुनिया के देशो के साथ भारतीय भी इन स्थानों पर घूमने जाया करते है। विश्व के प्रमुख देशों के सम्मुख भारत की झलकियां प्रस्तुत की जा रही है, जिससे आकर्षित होकर दुनिया के देश भारत की ओर आकृष्ट होंगे, जो भारत को बुनियादी ढांचे, संस्कृति और विरासत के स्तर को दुनिया के सम्मुख प्रदर्शित करने का एक वृहद व्यापार का अवसर होगा। भारत के लिए अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दो पर वैश्विक एजेण्डे में योगदान करने का एक अनूठा अवसर हैं। जहां भारत एक ओर विकसित देशो के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है, वही विकासशील देशो के विचारों को अच्छी तरह से इस मंच के माध्यम से विकसित राष्ट्रों के सम्मुख रख सकता है।

मूल्य की अवधारणा

डॉ० अर्चना सक्सेना
शिक्षाशास्त्र विभाग

विशाल संसार प्रकृति की एक सुन्दरतम देन है। बुद्धि और विभिन्न कौशलों के आधार पर मनुष्य ने विश्व में अवतरित होकर नाना प्रकार के क्रियाकलाप करते हुए एक समाजह की रचना की है। जहाँ मनुष्य है, वहाँ कोई न कोई समाज अवश्य होता है। समाज के उत्थान के लिए अनेक नियम, रीतिरिवाज, परम्परायें बनायी जाती हैं, जो समाज को सही दिशा में संचालित करते हैं। परम्परायें समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक और अध्यात्मिक विकास को बहुत प्रभावित करती हैं। परम्पराओं से ही प्रथायें जन्म लेती हैं। प्रथाओं का सम्बन्ध हमारे प्रमुख दायित्वों से होता है, जिनका पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य होता है। परम्पराओं से प्राप्त वह समस्त चिन्तन और क्रियाकलाप, जो मानव जीवन को निर्देशित करने का कार्य करते हैं, मूल्य कहलाते हैं।

सुखद भविष्य के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है। मानव जीवन का एक समयबद्ध व्यापक दर्शन है। मानव जीवन मूल्यों से भरा है। मनुष्य के विवेक पर भौतिक पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण के कारण जीवन के पुरातन मूल्यों में हमारी आस्था समाप्त सी हो गयी है। वर्तमान समय में शोषण करना शोषक को शोभनीय लगता है। आधुनिक बन जाने की होड़ में शामिल भारतीय पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित हो रहे हैं। आज के समय में आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने की आवयश्यकता है।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को उचित रूप में मूल्योन्मुख करें। हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों के मन में उचित मूल्यों को बैठाने की ओर ध्यान दिया जाए ताकि देश का भावी मार्ग प्रशस्त हो।

Commendable Growth in Indian Economy

Dr. Arti Dixit
Asstt. Professor, Commerce

In this transforming global discourse, India is prioritising economic growth using a humancentric model to build an inclusive, sustainable and green growth story. While most developed nations were faced with the question of decarbonization long after industrialization, India's multipronged approach aims to address industrialising anddecarbonizing the nation sumultaneously. This is an interdependent world where globalisation through land, the seas and technology, ensure that individuals and countries rely on each other on an everyday basis. India's approach must be inward as well as external facing. When India took over G20 presidency last year, it gained center stage among the 4.6 billion citizens of G20 member nations. India's G20 presidency is a watershed moment in time as it provides unparalleled opportunity to showcase to the world, India's cultural and business heritage and its true potential to become a defining force in the global economic order. Fifth now, soon to be third the Indian economy continues to witness impressive growth.

In this transforming global discourse, India is prioritising economic growth using a human-centric model to build an inclusive, sustainable and green growth story. Challenges lie ahead, as India must tackle multiple hurdles at the same time. With a $122 billion outlay for building roads, highways, and first and last-mile transport, the government aims to set India the stagefor a New India, well on its path to become a $5 trillion economy. India is currently the fifth largest growing economy in the world, soon to be the third largest after surpassing Japan. India's economic growth surpassed expectations when the real GDP grew at 6.1% in 2023. International Monetary Fund (IMF) in its World Economic Outlook in April 2023, projected that the Indian Economy will grow by 5.9 per cent in 2023, making it the fastest-growing economy in the world. The life in the last quarter has been the strongest in Asia, and displays resilience in a post-pandemic economy which was ridden with trade and geopolitical shocks. India's economy is pegged to grow at a rate higher than 7% annually, driven by information technology, manufacturing, and agriculture sectors. Structural reforms such asthe Goods and Service Tax (GST), Real Estate Regulatory Authority (RERA) Act and the Insolvency and Bankruptcy Code (IBC) have played a huge role in this growth. The whole world watched as India became a global supplier of COVID-19 vaccines during the peak of the pandemic. Sooner rather than later, India will become a global supplier of semiconductors. Semiconductors have bought the global automobile sector on its knees.

When it comes to manufacturing, it would be ideal to have large companies that can cater to global needs while handholding MSMEs through their operations. Investments in India's green energy sector is a mojor push for India's emerging manufacturing aspirations with green growth. Bank of

America estimates the green investments to reach as much as $800 billion over the next decade where the renewable energy sector may attract aound $250 billion, while batteries garnering $250 billion long with grid infrastructure and other areas such as green hydrogen and equipment receiving $300 billion in total investments. India's recently annuunced National Green Hydrogen Mission, also aims to make India as export hub for green hydrogen and its derivatives. The blooming agricultural export sector is backed by several initiatives led by the central government. The Farmer Connect Portal is run by the Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority (APEDA) and provides a digital platform to integrate farmer and aggregator activities while enabling their easy and direct interaction with exporters. The One District One Product - District as Export Hub (ODOP - DEH) initiative has further identified products from 765 districts of India to push newly identified business products to manufacture at-scale and export in the international market. Other schemes such as the Mission for Integrated Development of Horticulture and the National Food Security Mission are supporting holistic farming practices, while the Department of Agriculture and Farmers' Welfare is implementing several campaigns using mass media and social media to raise awareness on modern agricultural techniques. For India to becomke a leader in export, the country needs to adopt a future-forward outlook regarding agricultural exports. India is a major exporter of rice, sugar and wheat, with rice being the agricultural product exported in the highest quantities from India. This leaves great potential for millets - India's very own ancient nutricereal - to be included in India's agricultural export mix. Millets are nutrient-dense and require much less water. India needs to India's recently announced Natgional Green Hydrogen Mission, also aims to make India an export hub for green hydrogen and its derivatives. Our resources strongly position us to lead this alternative supply chain over the next 10-30 years, but we cannot do it alone. India must leverage its position on the global stage for collaborations and partnerships that help this nation lead the world into a postmodern economic global order.

समाजशास्त्र में जातीयता

डॉ० सरला त्रिपाठी
समाजशास्त्र विभाग

समाजशास्त्र में, जातीयता एक अवधारणा है, जो साझा संस्कृति और जीवनशैली का सन्दर्भ देती है। इस भाषा, धर्म, कपड़े और भोजन जैसी भौतिक संस्कृति और संगीत एवं कला जैसे सांस्कृतिक उत्पादों में पतिबिम्बित किया जा सकता है। जातीयता अक्सर सामाजिक एकता के साथ–साथ सामाजिक संघर्ष का एक प्रमुख स्रोत है।

विश्व हजारों जातीय समूहों का घर है, जिनमें हान चीनी–दुनिया का सबसे बड़ा जातीय समूह से लेकर सबसे छोटे स्वदेशी समूह तक शामिल है, जिनमें से कुछ में केवल कुछ दर्जन लोग शामिल हैं। इनमें से लगभग सभी समूहों का एक साझा इतिहास, भाषा, धर्म और संस्कृति है, जो समूह के सदस्यों को एक समान पहचान प्रदान करते हैं।

सीखा हुआ व्यवहार–

नस्ल के विपरीत, जातीयता, जैविक लक्षणों पर आधारित नहीं है, जातीय समूहों के मामले को छोड़कर जो सदस्यता के लिए आवश्यकताओं के रूप में कुछ लक्षणों को पहचानते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी विशेष जातीय समूह को परिभाषित करने वाले सांस्कृतिक तत्व सिखाए जाते हैं, विरासत में नहीं।

इसका मतलब यह है कि जातीय समूहों के बीच की सीमाएँ, कुछ हद तक तरल हैं, जो व्यक्तियों को समूहों के बीच स्थानान्तरित करने की अनुमति देती है। ऐसा हो सकता है, उदाहरण के लिए, जब एक जातीय समूह के बच्चे को दूसरे जातीय समूह में गोद लिया जाता है, या जब कोई व्यक्ति धार्मिक रूपान्तरण से गुजरता है।

यह संस्कृति–संस्करण की प्रक्रिया के माध्यम से भी हो सकता है, जिसके तहत एक मूल समूह के सदस्यों को एक प्रभुत्वशाली मेजबान समूह की संस्कृति और शिष्टाचार को अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है।

जातीयता को राष्ट्रीयता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो नागरिकता को सन्दर्भित करती है। जबकि कु1छ देश बड़े पैमाने पर एक ही जातीय समूह (मिस्र, फिनलैण्ड, जर्मनी, चीन) से बने हैं, जबकि अन्य कई अलग–अलग समूहों (संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, फिलीपीन्स, पनामा) से बने है।

1600 के दशक में यूरोप में राष्ट्र–राज्यों के उदय के कारण कई देशों का निर्माण हुआ, जो आज भी जातीय रूप से समरूप हैं। उदाहरण के लिए, जर्मनी की जनसंख्या में 91.5 प्रतिशत जर्मन हैं।

दूसरी ओर, जिन देशों की स्थापना उपनिवेशों के रूप में की गई थी, उनमें कई जातियों का घर होने की अधिक संभावना है।

उदाहरण–

विभिन्न जातीय समूह, समूह सदस्यता को परिभाषित करने के लिए समान मानदण्डों का उपयोग नहीं करते हैं। जहाँ एक

समूह साझा भाषा के महत्व पर जोर दे सकता है, वहीं दूसरा समूह साझा धार्मिक पहचान के महत्व पर जोर दे सकता है।

फ्रान्सीसी कनाडाई एक जातीय समूह है, जिनके लिए भाषा सर्वोपरि है। यह उन्हें उन फ्रन्सीसी उपनिवेशवादियों से जोड़ता है, जिन्होंने सबसे पहले 1600 के दशक में कनाडा को बसाया था और जो उन्हें अंग्रेजी कनाडाई, स्कॉटिश कनाडाई और आयरिश कनाडाई से अलग करता है। जब यह परिभाषित करने की बात आती है कि फ्रान्सीसी कनाडाई कौन हैं और कौन नहीं, तो संस्कृति के अन्य पहलू, जैसे कि धर्म, कम महत्वपूर्ण है। अधिकांश फ्रान्सीसी कनाडाई ईसाई हैं, लेकिन कुछ कैथोलिक हैं और अन्य प्रोटेस्टेण्ट हैं।

इसके विपरीत, यहूदियों जैसे समूहों के लिए धर्म जातीय पहचान का एक अनिवार्य हिस्सा है। फ्रान्सीसी कनाडाई लोगों के विपरीत, यहूदी खुद को एक साझा भाषा के आधार पर परिभाषित नहीं करते हैं। वास्तव में, दुनिया भर में यहूदी समुदायों ने विभिन्न प्रकार की विभिन्न भाषाएँ विकसित की हैं, जिनमें हिब्रू, विडिश, लाडिनो (जूदेव-स्पेनिश), जूदेव-अरबी और जूदेव-अरामाइक (कई यहूदियों का उल्लेख नहीं है, जो अंग्रेजी, फ्रेन्च, जर्मन या दुनिया की कई भाषाओं में से कोई भी भाषा बोलते हैं) शामिल हैं।

चूँकि जातीय समूह स्व-परिभाषित होते हैं, इसलिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि समूह की पहचान (भाषा, धर्म आदि) के किसी एक पहलू का उपयोग लोगों को एक समूह या दूसरे में क्रमबद्ध करने के लिए नहीं किया जा सकता है।

उपसंहार-

क्योंकि जातीयता एक विज्ञान से अधिक एक सांस्कृतिक अभ्यास है, आप संभवत: अपनी जातीयता को इस तरह से समझते हुए बड़े हुए हैं कि परीक्षण कभी भी मापने में सक्षम नहीं होंगे। आपने जो भोजन खाया, जिन परम्पराओं का आपने पालन किया, और जो भाषाएँ आप बोलते थे, वे सभी आपकी जातीय पहचान के आवश्यक पहलू हैं।

यदि आप अपनी सटीक वंशावली के बारे में अधिक जानने में रुचि रखते हैं, तो आप विभिन्न डीएनए परीक्षण सेवाओं को उपयोग करके ऐसा कर सकते हैं।

असतो मा सद्गमय

गौरीशंकर कोस्टा
निदेशक, योग निरोग केन्द्र, कानपुर

महापुरुषों ने कहा है– **'दुर्लभ मनुष्य देह है, मिलै न बारम्बार'** अर्थात् यह मनुष्य शरीर (मनुष्य जन्म) अत्यन्त कठिनता से कई जन्मों के सुकृतों के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है ता यह अमूल्य जन्म व्यर्थ के कार्यों में गवां देना, सबसे बड़ी मूर्खता होगी क्योंकि यदि हम सत्कर्म और उसके परिणामों पर श्रद्धाऔर विश्वास रखते हैं तो यह तथ्य भी हमें स्वीकरना होगा के अच्छे कार्य विचारों का प्रभाव हमेशा ही कल्याणकारक होता है। अब प्रश्न यह है कि इस अमूल्य ईश्वरप्रदत्त शरीर की सार्थकता किसमें है?

वास्तव में हम 'साधन' को ही 'साध्य' मानकर अत्यधिक महत्व उसे ही देते हैं। परमात्मा ने हमें जीवन को सुखपूर्वक निर्वहन के लिए अनेक साधन (जल, वायु, प्रकाश, सूर्य की ऊर्जा, खाद्य पदार्थ आदि) दिए हैं तथा मनुष्य ने विज्ञान द्वारा अनेक कृत्रिम साधन (टी०वी०, फ्रिज, विद्युत ऊर्जा चालित अनेक वस्तुएं, सुन्दर सज्जायुक्त भवन, यातायात के अत्याधुनिक साधन) भी जुटा लिए हैं परन्तु यदि हम आत्मविश्लेषण करें तो पायेंगे कि इन सभी वस्तुओं का उपयोग हम अपने शरीर की सन्तुष्टि के, पोषण के लिए करते हैं और हमारा ध्यान अपने अन्दर झांकने का प्रयास ही नहीं करता और इसी में सम्पूर्ण जीवन गुजर जाता है।

हम विषयानन्द में इतना डूब जाते हैं कि ब्रह्मानन्द की बात बल्कुिल ही भूल जाते हैं। सुख और आनन्द दो अलग–अलग अनुभूतियाँ हैं। और हम हैं कि दोनों को एक ही मान बैठे हैं। योग, ध्यान, भजन, पूजन आदि करते हैं तो दैनिक कार्यों की तरह एक निर्धारित समय तक। जबकि एक कवि ने कहा है कि–

श्वांस श्वांस में नाम ले, विरथा श्वांस न होय।
न जाने इस श्वांस का आवन होय न होय॥

तो क्यों न हम अपने भ्रमजाल से बबाहर निकल कर अपना ध्यान अपने साध्य पर केन्द्रित करना आरम्भ कर दें। आत्मचिन्तन, अजपाजप, चलते फिरते अपने कामों को करते हुए नाम जप करने का निरन्तर अभ्यास करें। इससे मन धीरे–घीरे अन्तर्मुखी होना आरम्भ हो जायेगा और आनन्द का स्रोत, जो हमारे अन्दर ही है, खुल जायेगा। हम आनन्द की खोज बाहरी वस्तुओं में करते हैं जबकि वह हमारे अन्दर ही है, वही परमात्मा है, वही ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का स्रोत है, वही ब्रह्म है। अहं ब्रह्मस्मि।

इस जीवन को क्षणभंगुर परन्तु अनमोल जानकर एक जौहरी की तरह इसका मूल्य जानें और अपने जीवन को सार्थक, रचनात्मक बनायें, तभी हम इसका सही उपयोग कर सकेंगे और अज्ञानरूपी अन्धकार को ज्ञानरूपी प्रकाश के द्वारा दूरकर अद्‍भुत आनन्द के स्रोत परमात्मा का साक्षात्कार कर सकेंगे।

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री प्रेम नारायण गुप्त	अध्यक्ष
2.	श्री महेन्द्र कुमार शुक्ल	उपाध्यक्ष
3.	श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'	सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक
4.	श्री राकेश कुमार मिश्र	संयुक्त मन्त्री
5.	श्री शंकर दत्त त्रिपाठी 'एडवोकेट'	सदस्य
6.	श्री उमाकान्त द्विवेदी	सदस्य
7.	डॉ० अजीत राय सब्बरवाल	सदस्य
8.	श्री बाँके बिहारी शुक्ल	सदस्य
9.	श्री सुधीर कुमार मिश्र	सदस्य
10.	श्री महेश चन्द्र मिश्र	सदस्य
11.	श्री रमन कुमार मिश्र	सदस्य
12.	प्रो० (डॉ०) विपित्य कुमार कटियार	पदेन सदस्य
13.	डॉ० बप्पा अधिकारी	सदस्य / प्रतिनिधि
14.	श्री दिनेश कुमार गौतम	सदस्य / प्रतिनिधि
15.	श्री अजय कुमार मिश्र	सदस्य / प्रतिनिधि

श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक

स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तिकरण योजनान्तर्गत स्मार्टफोन वितरण

इग्नू के पाठ्यक्रमों की प्रासंगिकता एवं रोजगार के अवसर विषयक संगोष्ठी